व्यंजना

2024-25

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा ए+ ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

अपर संचालक, उच्च शिक्षा दुर्ग संभाग डॉ. राजेश पाण्डेय, प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह
वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अभिनेष सुराना एवं डॉ.जगजीत कौर सलूजा के साथ महाविद्यालय पत्रिका
समिति के सदस्य डॉ. प्रशांत कुमार श्रीवास्तव, डॉ. निगारअहमद, डॉ. तरचोलन कौर संधू
डॉ.के पद्मावती, डॉ. ज्योति धारकर, डॉ. अनुपमा कश्यप, डॉ. सीमा पंजवानी

राष्ट्रीय युवा उत्सव 2025 में समूह नृत्य प्रतियोगिता में महाविद्यालय की टीम ने हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

द्रविण कुमार

मिनेष कुमार

सारिका निषाद

तोषन लाल तारन

चंचल ठाकुर

तारिणी विश्वकर्मा

क्षमा देवांगन

तुकेश्वर साहू

मोरध्वज

रिम्पा नायक

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2024-25

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित 'A+' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक
डॉ. अजय कुमार सिंह
प्राचार्य

संपादक मंडल
डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव
डॉ. के पद्मावती
डॉ. अनुपमा कश्यप
डॉ. ज्योति धारकर
डॉ. तरलोचन कौर संधु
डॉ. निगार अहमद
डॉ. सीमा पंजवानी
डॉ. रजनीश कुमार उमरे

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एकमात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

Website : www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email-pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

1. विश्वनाथ यादव तामस्कर एक परिचय ------------------------------------03
2. प्राचार्य की कलम से ------------------------------------04
3. युवाओं के लिए रोजगार : शिक्षा और कौशल का संबंध : छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में - तरूण कुमार साहू ------------------06
4. जय हिंद कैडेट्स - दुष्यन्त ------------------------------------ 11
5. कबीर - डॉ. रजनीश उमरे ------------------------------------13
6. मेरा साहसिक शिविर - मोरध्वज ------------------------------------17
7. कविताएँ : महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं के ------------------------------------20-31
8. भारतीय बाजार और डिजिटल पेमेंट - मनीष कुमार ------------------------------------ 32
9. सुनो सबकी करो अपने मन की - जया तिवारी ------------------------------------ 34
10. हसना मना है - प्रखर शर्मा ------------------------------------ 35
11. भूल - प्रखर शर्मा ------------------------------------ 36
12. छत्तीसगढ़ी व्यजन ला बचाये खातिर - राखी भारती ------------------------------------ 37
13. धर्म - डॉ. अनुपमा कश्यप ------------------------------------ 39
14. प्लास्टिक की समस्या - वाणी वर्मा ------------------------------------ 40
15. भूत से भिड़ गया - जैनेन्द्र कुमार दीवान ------------------------------------ 41
16. गुम होती युवा पीढ़ी - वैदेही ------------------------------------ 44
17. ठहराव की तलाश - निखिल देशलहरा ------------------------------------ 46
18. छत्तीसगढ़ के साहित्यकार संक्षिप्त विवरण ------------------------------------ 47
19. शताब्दी स्मरण - 2024-25, साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती ------------------------------------53-58
20. Empowering Dignity : The Visionary Work of Bindeshwar Pathak and Sulabh International
Priyam Vaishnava ------------------------------------ 59
21.Never Give Up : Kuldeep Tripathi ------------------------------------ 61
22. Life is not a problem to be solved : But a reality to be experienced.- Shreya Shukla ------------------------------------62
23. And I throw the keypad - Aditi Singh ------------------------------------ 64
24. Poem's of college students ------------------------------------ 66-68
25. The Power of Personality: Unlocking Personal and Professional Growth - Dr. Rajshree Naidu --------------- 69
26.The Theme of Social Class in Jane Austen's 'Pride and Prejudice' - Sugandha Saxena ------------------------------------73
27. Jane Austen: The Enduring Legacy of a Literary Genius - Harsh Sahu ------------------------------------ 78

श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था । आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये । यहाँ पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे । इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिष्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये । आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े। नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ। इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये। ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नहीं माँगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया । जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया । तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े। शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये । साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया। ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आँखों पर बैठाया था । तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये । 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से

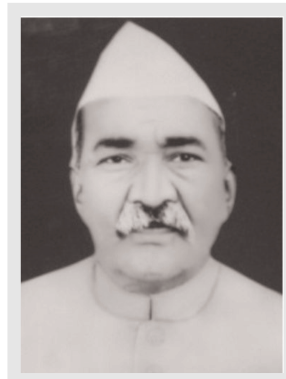

मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया। स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी । इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने । म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया । आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुचाते रहे। शायद छत्तीसगढ़ राय निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया । छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी । ऐसे कर्मठ एवं माटी-पुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है ।

प्राचार्य की कलम से

महाविद्यालय परिवार के समस्त साथियों,

आप सभी को नये शैक्षणिक सत्र की ढेर सारी शुभकामनायें। आप सभी को यह विदित है, कि नवम्बर 2025 में छत्तीसगढ़ प्रदेश अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। हम सभी के लिए यह गौरव का विषय है। सत्र 2024-25 में महाविद्यालय ने आप सभी के सहयोग से सफलता के अनेक सोपानों को पार किया है। हॉल ही में व्यापम द्वारा घोषित छत्तीसगढ़ सेट परीक्षा में 97 विद्यार्थियों का चयन इस महाविद्यालय की अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। इसी प्रकार शोध के क्षेत्र में महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित कर शोध के क्षेत्र में महाविद्यालय की दक्षता सिद्ध की है। महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों द्वारा प्रकाशित रिसर्च जर्नल्स के इम्पैक्ट फैक्टर का मान काफी उच्च है। अनेक प्राध्यापकों का एच. इनडेक्स, साईटेशन इनडेक्स का मान भी काफी अच्छा है।

महाविद्यालय ने शोध के क्षेत्र के साथ-साथ अकादमिक, खेलकूद, सांस्कृतिक, एन.सी.सी., एन.एस.एस., यूथ रेडक्रास आदि क्षेत्रों में अपनी उत्कृष्टता का परिचय दिया है।

वर्तमान शिक्षण सत्र में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव 2025 में समूह नृत्य प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने समूचे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय के साथ-साथ हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग का भी नाम रोशन किया है।

महाविद्यालय के एम.ए. समाजशास्त्र के नेट बॉल खिलाड़ी संजीव कुमार को छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रतिष्ठित पंकज यादव पुरस्कार से नवाजा गया है।

मैं महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थी एवं उनके पालकों का स्वागत करते हुए बधाई देता हूं तथा उनसे आशा करता हूं कि महाविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थियों की तरह प्रत्येक क्षेत्र में अपनी रचनात्मक सहभागिता प्रदर्शित करते हुए महाविद्यालय एवं अपने परिवार का नाम रोशन करें। महाविद्यालय आपका है। यहाँ आपके लिए उपलब्ध समस्त सुविधाओं का लाभ उठाते हुए अपना सर्वांगीण विकास करें।

वर्तमान शैक्षणिक सत्र में विद्यार्थियों हेतु दो नई कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं की स्थापना की गयी है। महाविद्यालय प्रशासन इस बात के लिए प्रयासरत् है कि आगामी शैक्षणिक सत्रों में भी विद्यार्थियों हेतु कैम्पस इन्टरव्यू तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विशेष कोचिंग कक्षाऐं आयोजित की जायें। महाविद्यालय के छात्र एवं कन्या छात्रावास में प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु पत्र-पत्रिकाओं की उपलब्धता एवं समय-समय पर छात्रावासी छात्र-छात्राओं हेतु कार्यक्रमों का आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में सार्थक कदम है। एक बार पुनः आप सभी को ढेर सारी शुभकामनायें।

जय हिन्द

Principal
Govt. V. Y T. P G. Autonomous
College Durg (C.G.)

युवाओं के लिए रोजगार : शिक्षा और कौशल का संबंध : छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में

तरूण कुमार साहू

सहायक प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र

भारत जैसे युवा राष्ट्र में रोजगार सृजन और कौशल विकास का गहरा संबंध है। देश में 2021 की जनगणना के अनुसार 65 प्रतिशत से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है। इतनी बड़ी युवा आबादी को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना एक चुनौती और अवसर दोनों है। इसके लिए शिक्षा और कौशल विकास को रोजगार से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। इस संदर्भ में, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों की भी अपनी विशिष्ट समस्याएं और संभावनाएँ हैं, जहाँ शिक्षा और कौशल विकास का सही उपयोग करके रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाया जा सकता है।

भारत में 2021 के आंकड़ों के अनुसार युवाओं में बेरोजगारी दर 12.5 प्रतिशत तक पहुँच गई थी, जो एक बड़ी समस्या का संकेत है। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य, जो मुख्यतः कृषि और खनन पर निर्भर हैं, वहाँ भी बेरोजगारी एक चुनौती बनी हुई है। राज्य में बेरोजगारी दर 2020 में 4.7 प्रतिशत थी, जो कि राष्ट्रीय औसत (7.5 प्रतिशत) से कम थी, लेकिन इसमें सुधार की गुंजाईश है। शिक्षा और कौशल विकास को बेहतर बनाकर युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं।

भारत में शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ है, लेकिन यह रोजगार के लिए पर्याप्त नहीं है। 2019 के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में 85 प्रतिशत इंजीनियरिंग स्नातकों को उनके अध्ययन के अनुसार रोजगार नहीं मिल पाता है, क्योंकि उनकी डिग्री और रोजगार बाजार की आवश्यकताएं मेल नहीं खातीं। इसका कारण शिक्षा प्रणाली में कौशल विकास की कमी है।

भारत में 2021-22 के एन.एस.ओ. (National Sample Survey Office) के आंकड़ों के अनुसार , ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की

कमी शहरी क्षेत्रों से अधिक है। 20 से 24 वर्ष की उम्र के करीब 30 प्रतिशत लोग रोजगार शिक्षा, या किसी प्रकार के प्रशिक्षण से बाहर हैं, जिसे NEET (Not in Employment , Educationm or Training) की श्रेणी में रखा जाता है। इस समस्या का समाधान तभी संभव है जब शिक्षा और कौशल विकास को रोजगार की जरूरतों के हिसाब से ढाला जाए।

छत्तीसगढ़ में, जहां 2021 के अनुसार 40 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या युवा वर्ग में आती है, शिक्षा और रोजगार का संबंध थोड़ा अलग रूप में देखा जा सकता है। राज्य के अधिकांश युवा कृषि और वन आधारित कार्यो में लगे हुए हैं। नौकरी प्रदान करने वाले बड़े उद्योग मुख्यतः खनन और निर्माण क्षेत्र से संबंधित हैं। 2020 के अनुसार, छत्तीसगढ़ की साक्षरता दर 70.28 प्रतिशत थी, जो राष्ट्रीय औसत (77.7 प्रतिशत) से कम है। इसके बावजूद, छत्तीसगढ़ में कई क्षेत्रों में रोजगार के अच्छे अवसर हैं, लेकिन उचित शिक्षा और कौशल की कमी के कारण युवाओं को उन अवसरों का लाभ नहीं मिल पाता।

छत्तीसगढ़ के श्रम शक्ति सर्वेक्षण (2020-21) के अनुसार राज्य में कुल श्रम बल की हिस्सेदारी 49 प्रतिशत थी, जिसमें से पुरुषों की हिस्सेदारी 65 प्रतिशत और महिलाओं की 35 प्रतिशत थी। वर्तमान में बेरोजगारी दर में गिरावट आई है, परंतु रोजगार की गुणवत्ता में सुधार आवश्यकता बनी हुई है।

भारत सरकार ने कौशल विकास पर विशेष जोर दिया है, क्योंकि शिक्षा से केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त होता है. जबकि रोजगार के लिए व्यावहारिक कौशल की आवश्यकता होती है। भारत में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के तहत 2021 तक 1 करोड़ से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। इसका उद्देश्य युवाओं को रोजगार योग्या कौशल प्रदान करना है।

छत्तीसगढ़ में, छत्तीसगढ़ राज्य कौशल विकास मिशन (CGSDM) के तहत 2021 तक 1.5 लाख से अधिक युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया गया। इनमें 50 प्रतिशत से अधिक लोग खनन, कृषि, और निर्माण क्षेत्रों में थे। यह दिखाता है कि राज्य में कौशल विकास की माँग अधिक है, लेकिन इसके

लिए और अधिक संसाधनों की आवश्यकता है।

छत्तीसगढ़ में सरकारी पहलों, चुनौतियों और समाधानों के संदर्भ में यह स्पष्ट है कि शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। यदि राज्य सरकार, उद्योग और शैक्षणिक संस्थाएँ मिलकर काम करें तो रोजगार के अवसरों को बढ़ाया जा सकता है, जिससे राज्य की आर्थिक प्रगति में भी तेजी आएगी।

छत्तीसगढ़ रोजगार और कौशल विकास की चुनौतियों को हल करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैः

शिक्षा और कौशल विकास के बीच तालमेल बढ़ानाः राज्य के स्कूलों और कॉलेजों में उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल विकास के पाठ्यक्रम को शामिल करना चाहिए। छात्रों को रोजगार योग्य बनाने के लिए उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

स्वरोजगार को प्रोत्साहनः स्वरोजगार के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए सहायता : तकनीकी सहायता और विपणन सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए। सरकारी योजनाओं के तहत आर्थिक सहायता और सूक्ष्म वित्तीय संस्थानों के माध्यम से लघु उद्योगों के लिए ऋण प्रदान किया जा सकता है।

उद्योग-शिक्षा साझेदारी : उद्योगों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग बढ़ाना चाहिए, ताकि प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार डिज़ाइन किए जा सकें। छत्तीसगढ़ में स्थानीय उद्योगों को राज्य की शैक्षणिक संस्थाओं के साथ मिलकर ट्रेनिंग कार्यक्रम विकसित करने चाहिए।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार : राज्य में प्रशिक्षण केंद्रों की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रशिक्षकों की क्षमता बढ़ानी होगी और नवीनतम तकनीक से लैस उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी। कौशल विकास प्रशिक्षण के लिए सरकारी बजट को बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करना आवश्यक है।

नए उद्योगों की स्थापना और स्थानीय रोजगार के अवसरः राज्य में अधिक से अधिक उद्योगों को स्थापित करने के लिए अनुकूल नीतियाँ बनाई जानी

चाहिए। इसके साथ ही स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए राज्य सरकार को निजी क्षेत्र के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए शिक्षा और कौशल विकास के बीच एक सुदृढ़ संबंध स्थापित करना आवश्यक है। 2021 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार छत्तीसगढ़ में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले युवाओं में रोजगार की संभावना उन लोगों की तुलना में 25 प्रतिशत अधिक थी, जिनके पास केवल पारंपरिक शिक्षा थी। इसका सीधा अर्थ है कि रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए कौशल विकास को शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाना होगा।

छत्तीसगढ़ में सरकारी पहल : छत्तीसगढ़ सरकार ने युवाओं के कौशल विकास और रोजगार सृजन के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू की है। यहाँ कुछ प्रमुख सरकारी पहलों का उल्लेख किया गया हैः

छत्तीसगढ़ राज्य कौशल मिशन (CGSDM) : इस मिशन का उद्देश्य युवाओं को औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित कर रोजगार के योग्य बनाना है। मिशन के तहत कौशल प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में कौशल प्रदान किया जाता है। आंकड़ा 2021 तक (CGSDM) : के तहत 1.5 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया गया।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)**:** यह योजना भारत सरकार द्वारा संचालित है और छत्तीसगढ़ में इसे सफलतापूर्वक लागू किया गया है। इसके तहत युवाओं को उद्योग आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। आंकड़ा 2021 तक छत्तीसगढ़ में (PMKVY) के तहत 1 लाख से अधिक युवाओं के प्रशिक्षण दिया गया।

गौठान योजना : छत्तीसगढ़ सरकार की यह योजना ग्रामीण युवाओं को कृषि आधारित स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षित करती है। योजना का उद्देश्य युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर प्रदान करना है। आंकड़ा 2021 तक गौठान योजना के तहत 2.5 लाख से अधिक युवाओं को रोजगार मिला है।

2024-25

मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना : इस योजना के अंतर्गत राज्य के युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जाता है और उनके व्यवसाय शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। आंकड़ा 2020-21 में 10,000 से अधिक युवाओं को इस योजना के तहत लाभ प्राप्त हुआ।

इस योजना के तहत मोबाइल ट्रेनिंग यूनिट्स के माध्यम के दूरदराज के क्षेत्रों में युवाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह पहल ग्रामीण क्षेत्रों तक कौशल प्रशिक्षण पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आंकड़ा इस योजना के तहत 1 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया गया।

हालाकि छत्तीसगढ़ में कौशल विकास पर ध्यान दिया जा रहा है, लेकिन अभी कई चुनौतियाँ हैं जो राज्य के युवाओं को रोजगार प्राप्त करने में बाधा बन रही हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी : छत्तीसगढ़ का बड़ा हिस्सा ग्रामीण और आदिवासी है, जहाँ शिक्षा और कौशल विकास के प्रति जागरूकता की कमी है। इसका कारण शिक्षा तक पहुँच की कमी और पारंपरिक रोजगार पर निर्भरता है। उदाहरणः 2021 के डेटा के अनुसार, छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 55 प्रतिशत युवाओं को कौशल विकास योजनाओं की जानकारी थी।

संरचनात्मक चुनौतियों : कई दूरस्थ क्षेत्रों में प्रशिक्षण केंद्रों की कमी और प्रशिक्षकों की उपलब्धता एक बड़ी समस्या है। 2021 के एक सर्वेक्षण में बताया गया कि 20 प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षण केंद्रों प्रशिक्षकों की कमी थी और 30 प्रतिशत में उपकरणों की कमी थी।

गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण की कमी : प्रशिक्षण की गुणवत्ता में भी कई प्रकार की सुधारों की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ में कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं में 2020-21 में केवल 40 प्रतिशत को ही रोजगार मिला। जबकि बाकी युवाओं को रोजगार की तलाश में मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

स्थानीय रोज़गार के अवसरों की कमी : राज्य में प्रशिक्षत युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर पर्याप्त रोजगार के अवसर नहीं है ।

* * *

जय हिंद कैडेट्स

दुष्यन्त

मैं जूनियर अण्डर ऑफिसर दुष्यंत आज अपनी NCC में हुए (RDC - 2025) गणतंत्र दिवस शिविर जो नई दिल्ली में आयोजित होती है उसमें जो सहभागिता प्रदान की जो मुझे सीख मिली वो मैं आप सब के बीच साझा करना चाहता हूँ।

मैं इस वर्ष 2025 के गणतंत्र दिवस शिविर में नई-दिल्ली में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ निदेशालय का प्रतिनिधित्व किया जो DG NCC द्वारा आयोजित होता है। गणतंत्र दिवस शिविर के लिए पूरे भारत से NCC कैडेट का चयन किया जाता है। भारत में 17 निदेशालय NCC के है जिसमें से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ निदेशालय एक है। इस निदेशालय में 6 ग्रुप (भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, सागर, जबलपुर, रायपुर) है जिसमें मैं रायपुर ग्रुप से था। आगे Selection दिलाने के बाद मैं मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ निदेशालय का कैडेट बन गया मैने RDC - 2025 नई-दिल्ली की यात्रा के लिए कुल ८ कैम्प किये और ९वाँ कैम्पर मेरा RDC कैम्प था हमारा कैम्प 10 दिनों का होता है पर RDC एक मात्र कैम्प है जहॉ 30 दिनों तक 1 महिने का लगातार कैम्प पर होता है।

पहले हमारा बटालियन Selection लेवल पर होता है फिर लेवल पर फिर Group लेवल पर फिर direction लेवल पर Selection होता है इस प्रकार मैने सभी लेवल पार करते हुए ८ Selection दिलाये जिसमें मेरी मेहनत रंग लाई और मै RDC के लिए चयनित हुआ। RDC बहुत सी विधाओं पर Selection होती है जिसमें मैंने Cultrurl विधा में RDC किया।

ऐसे ही हमने परिश्रम किया बहुत ज्यादा और पहली बार 18 साल का रिकार्ड तोड़ते हुए हमारे NCC के मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ निदेशालय ने तीसरा व चौथा स्थान प्राप्त किया। हमने RDC नई दिल्ली में सभी राज्यों के कैडेट से मुलाकात की उनसे नयी नयी बाते सीखी NCC के बारे में कि वहाँ क्या

होता है। उनके Cultrurl के बारे में जाना। हमने कई आर्मी के अधिकारियों से मुलाकात की मैंने तीनो सेनाओं के प्रमुख से सामुहिक मुलाकात की मैंने थल सेना के प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी (PVSM, AUSM) से बात की उन्होंने मुझे गिफ्ट भी दिया। और सबसे बड़ी मेरे लिए उपलब्धि ये था कि मैंने माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के समक्ष नृत्य किया अपनी कला का प्रदर्शन किया RDC - 2025 ने मुझे न ही एक अच्छा जीवन ही नहीं दिया बल्कि इसने एक प्लेटफार्म खड़ा किया है कि आज मैं अपने करियर को बना सकता हूँ इस दौ-रान मैंने बहुत सी परीक्षाएं दी और आगे परिक्षाओं मैं कई जगहों पर मै डगमगाया पर मैने हिम्मत नहीं हारा और आज अपना जो RDC का जो सपना था उस उसको पूरा किया। मैं आपको भी यही बोलूंगा कि आप मेहनत इतना कीजिए कि आपको वो सब मिले जो आप चाहते है। आपका भी सपना पूरा होगा मैं जब तक किसी 10 बच्चे को NCC कैडेट बनने के लिए प्रेरित नहीं करूँगा तब तक मेरा NCC का सपना अधूरा होगा।

आप भी कोशिश कीजिए कि NCC के प्रति छात्रों को जागृत करें जिससे देश-सेवा राष्ट्रीय एकता और अनुशासन को छात्र स्वयं में ला पाए और भविष्य में NCC कैडेट बन पाए।

०००

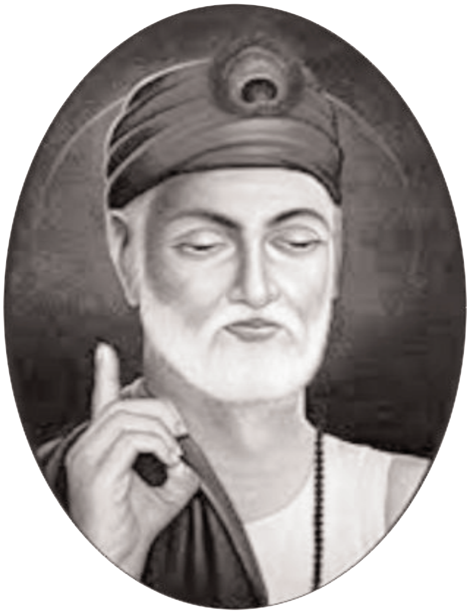

कबीर

डॉ. रजनीश कुमार उमरे
अतिथि प्राध्यापक
(हिन्दी विभाग)

सभ्यता के विकास से आज तक के विकास को देखें तो यह ज्ञात होता है कि सदियों में कोई एक ऐसा पैदा होता है, जो सदियों को प्रभावित करता है। संत शिरोमणि कबीरदास ऐसे ही महामानव हैं जिन्होंने अपने समय व उसके बाद सदियों को प्रभावित किया है। वे 15 वी शताब्दी के अनुपम रत्न हैं।

कबीर का जन्म अज्ञात है स्वयं कबीर ने अपने जीवन के विषय में बहुत कम संकेत दिया है। जन-श्रुतियाँ ही कबीर के जीवन को समझने का सहारा है। समय-समय पर विद्वानों ने कबीर के संदर्भ में जो अनुसंधान किए हैं। उनसे कबीर के जीवन काल का अनुमान होता है। माना जाता है कि कबीरदास सिकंदर लोदी के समकालीन थे। सिकंदर लोदी का समय 1486 से 1517 ईस्वी माना जाता है। अतः कह सकते हैं कि कबीर का समय चौदहवी और पंद्रहवीं शताब्दी का है।

किवदंती यह भी है कि काशी के लहरताल तालाब पर नीरू तथा नीमा नामक निःसंतान दंपति को नवजात शिशु अनाथ अवस्था में मिला। नीरू और नीमा ने ही इस बालक का पालन पोषण किया जो बाद में संत कबीरदास के नाम से विख्यात हुए।

कबीर दास की जन्म तिथि के विषय में कबीर पंथ में एक दोहा प्रचलित है -

चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाट ठए।
जेठ सुदी बरसायत की, पूरण मासी प्रकट भए।।

इस आधार पर कबीर की जन्म तिथि 1455 जेष्ठ मास की पूर्णिमा ठहरती है।

कबीर की जन्मतिथि की तरह जन्म स्थान को लेकर भी मत भिन्नता है। कबीर की प्रचलित पंक्ति है

सरल जन्म सिवपुरी गंवाइयां ।
मरती वार मगहरी उठी धाइयां ॥

इस पंक्ति के आधार पर कबीर काशी में ही पैदा हुए यह स्पष्ट हो जाता है।

कबीर की जन्म तिथि और जन्म स्थान को लेकर भिन्नता अवश्य है लेकिन उनके अस्तित्व में होने पर विद्वान

पूर्णतः सहमत हैं। जीवन में जन्म से अधिक कर्म की महत्ता है कबीर अपने कर्म से जाने जाते हैं। जन्म और जीवन के संदर्भ में कबीर की यह पंक्ति भी प्रचलित है-

पानी से पैदा नहीं स्वांस नहीं शरीर।
अन्न आहार करता नहीं ताका नाम कबीर।।

कबीर कवि थे या समाज सुधारक? इस पर भी मत भिन्नता है लेकिन कबीर एक जागृत चेतना हैं, विराट विचार हैं। यह सर्व स्वीकृत है। अपनी चेतना और विचार के आलोक में कबीरदास ने जो भी कहा वह कविता बन गई। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने कहा है -

मसि कागद छुयों नहीं, कलम गही नहिं हाथ।
चारों युग के महातम, मुखी जनाई बात ।।

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, इसका यह अर्थ नहीं है कि वह अशिक्षित थे। उनके विषय में कह सकते हैं कि वे साक्षर नहीं थे लेकिन शिक्षित थे। संगत, सत्संग और जीवन के अनुभव से उन्होंने गहरी शिक्षा प्राप्त की थी। अपने अनुभव के बल पर वे ऐसे शिक्षक हुए जिन्हें युगगुरु माना जाता है और अपनी शिक्षा के बल पर ही वे तर्क करते हैं -

तेरा मेरा मनवा, कैसे एक होई रे।

तू कहता कागज की लेखी, मैं कहता आंखन की देखी।। उनकी शिक्षा किताबी शिक्षा नहीं थी, आँखों देखा ज्ञान था। अपने इसी ज्ञान के आधार पर वे मोह और प्रेम जिसे हम पर्याय समझते हैं। उसका कबीर ने अंतर बता दिया। मोह को वे सांसारिक माया के अर्थ में तथा प्रेम को मानवीय रिश्ते के रूप में व्यक्त करते हैं। वे जब मोह की बात करते हैं, तब कहते हैं -**'मैं कहता निमीही रहियो, तू जाता है मोही रे'**

मोह को उन्होंने विद्वता नहीं माना लेकिन प्रेम उनके लिए विद्वता है वे कहते हैं -

'पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय ।।'

प्रेम की अनुभूति व्यक्त नहीं की जा सकती। प्रेम की अनुभूति के संदर्भ में कबीर कहते हैं -

अकथ कहानी प्रेम की, कछु कहीं ना जाइ।
गूंगे केरि सरकरा, खाय अरु मुस्काई। ।।

कबीर ने शिक्षा के लिए किताबों की जगह सच्चे गुरु की महत्ता को स्वीकार किया है। गुरु की महत्ता को ईश्वर से अधिक स्वीकारते हुए कहते हैं -

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताए ।।

गुरु के महत्व को ईश्वर से अधिक मानना कबीर के साहस का प्रमाण है। लेकिन कबीर ने छद्म गुरुओं की सच्चाई को साहस के साथ बेनकाब करते हुए कहा है -

जाका गुरु आंधरा, चेला खरा निरंध।
अंधे अंधा ठेलिया, दोनों कूप परंत।।

कबीर जो कहते खरी-खरी कहते। कबीर जितने प्रेमी थे उतने ही निर्मम थे। सच कहने से वे चूकते नहीं थे। वे मानवीय प्रेम के सच्चे पुजारी थे। मानवीय मूल्य की स्थापना उनकी रचनात्मकता थी। उनके लिए मानव मानव में कोई भेद नहीं था वे धर्म जात-पांत के भेद से परे थे। वे कहते थे।

जाति पाँति पूछे नहीं कोई,
हरि को भजे सो हरि को होइ।

कबीर जात-पात की जगह ज्ञान को महत्व देते हैं, वे

2024-25

कहते हैं -

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

कबीर कुछ लोगों के लिए कड़वे हैं, तो बहुतों के लिए मीठे हैं । कड़वे उनके लिए हैं जो आडंबर का प्रचार कर अपना हित साधते हैं। लोगों को गुमराह कर अपनी दुकान चलाने वालों को कबीर ने खूब लताड़ा। कबीर उनके लिए मीठे हैं, जो आम इंसान हैं। सरल हैं, सहज हैं, मानवी प्रेम से भरे हैं। ऐसे श्रमजीवी लोगों के लिए कबीर मीठे हैं। कबीर आमजन में स्वीकृत हैं। वे आम जनों के पथ-प्रदर्शक हैं, सच्चे सदगुरु साहेब हैं। आम जनों को कबीर ने संतोष परक जीवन जीने की प्रेरणा दी धन संग्रह की जगह उन्होंने ईश्वर से याचना की -

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाए ।।

कबीर निर्धन आमजन की दुख पीड़ा को पूरी संवेदना के साथ महसूस करते हैं। समाज में आर्थिक असमानता के तहत निर्धन को कदम कदम पर अपमानित किया जाता है। उनका शोषण किया जाता है। समाज के धनी कितने अमानवीय तथा निर्धन शोषण के बावजूद कितने व्यवहार कुशल मानवीय हैं इसका उदाहरण देते हुए कहते हैं -

निर्धन आदर कोई ना देई, लाख जतन करैं चित ना धरेई । जो निरधन सरधन कैं जाई। आगे बैठे पीठ फिराई।

जो सरधन निरधन कै जाई। दिया आदर लिया बुलाई।

कहे कबीर निर्धन है सोई, जाकैं हिरदै हिरदै न होई

जन पक्षधरता के साथ उन्होंने उन खास या समाज में धन बल से प्रतिष्ठित, लोभी शोषक वर्ग को चेताया कि -

तिनका कबहुं ना निंदिये, जो पांव तले होय।
कबहूं उड़ अखियन पड़े, पीर घनेरी होय ।।

समाज के ऐसे तथाकथित बड़े लोगों को महत्वहीन घोषित करते हुए वे कहते हैं -

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर ।।

कबीर का समय हताशा और निराशा का समय था। बाहरी आक्रमणकारी तथा देशी रियासतों के आपसी युद्ध में जनता पिस चुकी थी। उनमें असुरक्षा तथा भय का भाव व्याप्त था। इन विषम परिस्थितियों में कबीर अपने अनुयायी भक्तों तथा आम जनों के टूटे मन को अपनी वाणी से बल दे रहे थे। उन्हें उत्साहित करते हुए कह रहे थे -

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
मन ही को परतीत है, तो ब्रह्म लोक को गीत ।।

कबीर की रचनाएं अमर हैं और सदा अमर रहेंगी। कबीर एक ऐसे प्रमाण हैं जिन्हें उनके विरोधी भी प्रमाणित करते हैं। कबीर पंथ के विपरीत पंथ प्रचारक भी कबीर के पदों को अपने उपदेशों तथा उद्बोधन में प्रयुक्त करते हैं। कबीर का सम्मान उनके विपरीत विचारधारा के लोग भी करते हैं। कबीर आस्तिक थे लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि कबीर नास्तिकों में भी बड़े लोकप्रिय हैं। कबीर नास्तिकों को भी ऊर्जा देते हैं। कबीर पर अपनी बात रखते हुए नास्तिक अनायास ही आस्तिक हो जाते हैं। नास्तिकों को कबीर की विचारधारा खूब भाती है। सच

कहा जाए तो नास्तिकों ने धर्मगुरु होने के बावजूद कबीर का सर्वाधिक सम्मान किया। कबीर सही मायने में अजातशत्रु है।

कबीर अपने जीवन और अपनी विचारधारा के साथ अपनी मृत्यु से भी प्रभावित करते हैं। विचार के प्रति प्रतिबद्धता को उनकी मृत्यु प्रमाणित करती है। काशी के विषय में मान्यता है कि यहाँ जिसकी मृत्यु होती है उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। वही यह मान्यता भी थी कि जिसकी मृत्यु मगहर में होती है

वह स्वर्ग से वंचित हो जाता है। काशी में जीवन जीने और मृत्यु के समीप मगहर जाकर वहाँ मृत्यु को पाना कबीर की क्रांतिकारिता का प्रमाण है। उन्होंने काशी और मगहर को एक माना तथा मगहर को काशी के समक्ष स्थापित किया।

किवदंती है कि कबीर की मृत्यु के बाद दो समुदाय ने कबीर के पार्थिव शरीर पर दावा किया। वे अपने-अपने धार्मिक विधान से अंतिम संस्कार करना चाहते थे। कफन हटाकर देखा गया तो शरीर नहीं था। शरीर की जगह फूल थे। दोनों समुदाय ने अंतिम संस्कार के लिए फूल आधा-आधा बांट लिया। एक ने उसे जला दिया। दूसरे ने उसे दफना दिया। लेकिन कबीर मरे कहाँ थे वे तो जन-जन के हृदय में जीवित थे, और हैं। विचार कभी मरता नहीं। कबीर आज भी अपने विचारों के साथ जीवित हैं। सत्य का रास्ता बहुत कठिन होता है। कबीर सत्य के पक्षधर थे। उनका संघर्ष सत्य के लिए था। कबीर अपने अनुयायियों से कहा करते थे। सत्य के साथ चलना है तो संघर्ष करना होगा। सर्वस्व त्यागना होगा। संघर्ष के लिए सर्वस्व त्याग सको तो चलो -

कबीरा खड़ा बाजार में, लिया लुकाठी हाथ ।
जो घर फूंका आपना, चलो हमारे साथ ।।

2024-25

मेरा साहसिक शिविर
(मेरा दोबारा जन्म - संस्मरण)

मोरध्वज
एम.ए. हिंदी (III सेम.)

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) में जुड़ने से मेरा जीवन बिल्कुल बदल गया जिससे मेरे व्यक्तित्व का विकास हुआ। इसीलिए मुझे मौका मिला एडवेंचर कैंप जाने का जहाँ से मैं दोबारा जन्म लेकर आया हूँ। मेरी यात्रा प्रारंभ होती है ।

महाविद्यालय में प्राचार्य महोदय, कार्यक्रम अधिकारी, जिला संगठक, साथ ही सभी विभाग के विभागाध्यक्ष के आशीर्वाद, बधाइयां और शुभकामनाएं देने के साथ । हमारी ट्रेन दिनांक 10 सितंबर 2024 को 12:00 बजे थी। मुझे रेलवे स्टेशन छोड़ने के लिए जिला संगठक प्रोफेसर जनेंद्र कुमार दीवान जी गए थे। हमारी ट्रेन 12:00 बजे निकल पड़ी और मुझे ए-1 में 12 नंबर की सीट मिली थीं। छत्तीसगढ़ से हम 22 लोग थे जिसमें 8 स्वयंसेवक हेमचंद यादव विश्वविद्यालय से, 4 स्वयंसेवक छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय से तथा 8 स्वयंसेवक अटल बिहारी वाजपेई विश्वविद्यालय से और दो कार्यक्रम अधिकारी हमारे साथ थे।

मैं सभी से अनजान था, लेकिन राष्ट्रीय सेवा योजना का स्वयंसेवक होने के कारण बिना झिझक के सभी से बहुत अच्छे से बातें हुई। शाम के समय सभी को मैंने अपने हाथों से बनी भेल खिलायी जिसे सभी ने बहुत पसंद किया। अगले दिन 29 घंटे की यात्रा के बाद हमारी ट्रेन शाम 5:00 बजे पठानकोट पहुँची। सभी बहुत थक चुके थे फिर भी हिम्मत ना हारते हुए सभी पठानकोट के बस स्टैंड से95 किलोमीटर दूर धर्मशाला के लिए बस में बैठे। मुझे खिड़की वाली जगह मिली थी। शाम के समय ढलते सूरज को निहारतेहुए मेरा मन बहुत ही शांत हो गया। खूबसूरत वादियों का आनंद मैंने खूब उठाया। समय का पता ना चला और हमारी बस धर्मशाला को रात 9:00 बजे पहुँची। हमें अपनी मंजिल 'स्वर्ग आश्रम' जाते-जाते लगभग 11:00 बज गए क्योंकि वहाँ रात को टैक्सियाँ नहीं मिल रही थी। जैसे तैसे हम संकरे, ऊँचे, टेढ़े मेड़े रास्तों से 'स्वर्ग आश्रम' पहुँचे जहां हमको हमारा कमरा दिखाया गया, उसके बाद सभी रात्रि का भोजन करके विश्राम करने गये। मैं बार-बार खूबसूरत वादियों के बारे में सोच रहा था, फिर अचानक याद आया की सुबह जल्दी उठना है।

12.9.2024 को हमारे साहसिक शिविर का पहला दिन रहा। सुबह उठकर स्नान करके जब मैं बाहर निकला तो बाहर की खूबसूरती देख प्रसन्न हो गया। बाहर बहुत सकारात्मक ऊर्जा फैली हुईं थीं साथ ही वादियों की खूबसूरती मन को लुभा रही थी । हमारे साथ राजस्थान (20) और दिल्ली (10) की भी टीम थी। पहले दिन सभी का पंजीयन हुआ साथ ही एडवेंचर कैंप के बारे में बताया गया। हम रोज सुबह

5:00 बजे उठ जाते थे, बहुत ज्यादा ठंड होती थी। 5:30 से हमें व्यायाम और योगाभ्यास कराया जाता था उसके बाद सुदंर जगहों का भ्रमण कराते थे। यह रोज की दिनचर्या थी। दूसरे दिन हमको चर्च ले गये और पर्वत चढ़ाई के दौरान उपयोग में आने वाले उपकरणों के बारे में बताया गया। तीसरे दिन हमने आर्टिफिशियल रॉक क्लाइंबिंग की जिसमें छत्तीसगढ़ की टीम ने बहुत ही अच्छा प्रदर्शन कि या। चौथे दिन फ्लैग पॉइंट भ्रमण किया और आर्टिफिशियल रैपलिग़ं की। पाँचवें दिन पौंग डेम का भ्रमण किया और जुमारिंग की जिसमें बहुत ही आनंद आया। साथ ही साथ श्म्तर्दुहर की गलियों में हम घूमें और वहां का मेला देखा। मेरे लिए सबसे अच्छा अनुभव यह रहा कि हम वहां रुके थे जहाँ तिब्बती धर्म गुरु दलाई लामा 8 साल रुके थे, जि सको 'स्वर्ग आश्रम' कहा जाता हैं। मैंने वहाँ एक दिन में चार मौसम बदलाव देखे सुबह 10:00 बजे तक कड़कती धूप, 2:00 तक बरसात, शाम 5:00 बजे तक कोहरा और सबसे सुन्दर सूरज ढलने का दृश्य मनमोहक लगा, उसके बाद रात को कड़ाके की ठंड से पूरा शरीर ठिठुर गया। जिसके कारण मेरी तबियत बि गड़ी और मुझे अस्पताल जाना पड़ा। इसी तरह छठवें दिन भागसु वॉटर फॉल का भ्रमण किया और हमे ट्रैकिंग के टिप्स बताये गये। सातवें दिन हम सुबह 7:00 बजे से चले गये रिवर क्रॉसिगं के लिए 7 किलोमीटर दुर पदैल गये और ऊपर से चट्टानों वाला रास्ता, रिवर क्रॉसिगं बहुत ही रोमांचक रहा। सभी न बहुत ही ज्यादा मौज मस्ती की, क्योंकि हम सभी एक दूसरे से मिल-जुल गये थे।

अगला दिन मेरे लिए सबसे बुरा भी और अच्छा भी दिन रहा जो कि कैंप का आठवां दिन था। इस दिन हमें चढ़ाई के लिए 'स्वर्ग आश्रम' से 12 कि लोमीटर दरूत्रियडुं के लिए पदैल ले जाया गया।

त्रियडुं सबसे ऊँची चोटी थी धर्मशाला की। रास्ता बहुत ही खराब, ऊबड़ खाबड़, बहुत ही संकरा और गीला था। सभी लोग और हमारे मार्गदर्शक

एक ही सीध में चल रहे थे क्योंकि रास्ता बहुत ही चढ़ाई वाला और दुर्गम था। त्रियडुं चढ़ाई के दौरान आधे रास्ते में ही दो लोगों ने हार मान ली और आधे रास्ते में ही बैठ गये। बाकी बचे 48 ऊपर चढ़ाई करने लगे।

चढ़ते चढ़ते हमारा रास्ता और संकरा हो गया। मेरे बाएं तरफ चट्टानें और दाएं तरफ गहरी खाई ऊपर से रास्ता दो से तीन फीट का और गीला भी जिसके कारण मेरा पैर फिसल गया और मैं 10 फीट नीचे गहरी खाई में झाड़ियाँ के बीच फंस गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था क्या करूं? दिमाग पूरा सुन्न हो गया था। एक पल के लिए ऐसा लगा मानो मेरी धड़कन रुक गयी हों। उस समय कुछ नहीं सूझ रहा था। मेरी एक गलती मेरी जान ले लेती। मेरे को हमारी टीम ने तने के सहारे ऊपर खींचा। तब ऊपर आके लगा मेरा दोबारा जन्म हुआ है।

धौलाधार रेंज की सुंदरता अद्वितीय है। धौलाधार रेंज बर्फ से ढका हुआ था, ठंडी हवा चल रही थी जिसके कारण हाथ भी काम नहीं कर रहे थे। ऊपर से वहां पर बहुत ही ज्यादा बरसात हो गई और उस बरसात में दुर्गम क्षेत्र में मैंने चाय की चुस्कियों का आनंद लिया, जिसकी कीमत 80 रुपए थी।

त्रियडुं में सभी ने भोजन किया उसके बाद सभी मौज मस्ती करते हुए फोटो खिचंवाते रहे और हमने अपने जीवन की एक अद्वितीय स्मतृि बना ली। हमको त्रियडुं के बारे में बताया गया कि तीन रास्तों के कारण इसका नाम त्रियडुं पड़ा। त्रियडुं से उतरने का मन नहीं था लेकिन मन को मारके इस खतरनाक रास्ते से हम लगभग 7:00 बजे स्वर्ग आश्रम पहुंचे और 25 कि लोमीटर की चढ़ाई पूरी की। नौवेंदि न सभी नेधर्मशाला, श्म्तर्दुेहर, भागसुमार्केट का भ्रमण कि या जो की अद्भुत था। साथ ही साथ इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम देखा, मैंने रास्ते में कुछ छत्तीसढ़ियाँ लोगों को देखा उनसे बात की तो पता चला कि वे वहां काम करते हैं, उन्होंने मुझे अपने घर बुलाया और चाय के लिए पूछा। समय हो रहा था इसलिए मैं वहाँ से निकल गया। दसवें दिन दिनांक 21.9.2024 को सांस्कृतिक कार्यक्रम और बैजसेरिमिनी से कैंप का समापन हुआ। हमको एडवेंचर कैंप की पूरी जानकारी देने के लिए वहाँ के ज्वाइंट डायरेक्टर श्री जितेंद्र सर, सहायक श्री सोमनाथ सर, श्री ब्रिज ठाकुर सर, किरण और शिवानी का मार्गदर्शन रहा। हम सभी ने कैंप इंजॉय किया और नए अनुभव के साथ सभी लोगों से विदा ली, सभी की आंखों में आंसू थे। ऐसा लग रहा था कि हम अपने घर से और परिवार से बिछड़ रहे है।

इस तरह 23.9.2024 को घर वापसी हुई, सच में मेरा दोबारा जन्म हुआ। इस बेहतरीन अवसर को प्रदान करने के लिए मैं हमारे प्राचार्य महोदय डॉ. एम.ए. सिद्दीकी, जिला संगठक व कार्यक्रम समन्वयक महोदय प्रो. जनेंद्र कुमार दीवान, हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.अभिनेष सुराना महोदय और राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र इकाई के कार्यक्रम अधिकारी एवं सहायक कार्यक्रम अधिकारी महोदय प्रो. तरुण कुमार साहू और प्रो. सुदेश साहू जी का बहुत बहुत धन्यवाद करता हूँ जिन के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से यह संभव हो पाया।

000

जब देखती हूँ किसी कि कहानी

संस्कृति मंडावी

बी.एस-सी. (बायोटेक)

जब देखती हूँ किसी कि कहानी

तब लगता है, मेरी कहानी ऐसी हों

फिर देखी किसी और की कहानी

तब लगा नहीं ऐसी हों

पर क्यों किसी के जैसे हों

तुम जैसी हों वैसी हों

दूसरों के घोसले कैसी भी हों

तुम्हें बस उन सबसे सिर्फ एक तिन्का लेना हैं

वो तिन्का तिन्का मिला कर

अपना घोसला बनाना हैं

और ऐसा बनाना हैं

की कोई आए, देखे और कहे तुमसे

एक तिन्का लेकर जाँऊ

कोशिश करूंगी की एक दिन मैं भी ऐसा घर बनाऊँ।

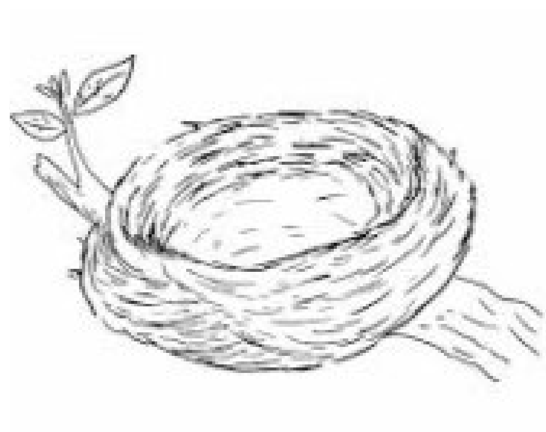

मुझे प्रेम है

गीतांजली साहू
एमएस-सी - 1
(माइक्रोबॉयलाजी)

हाँ मुझे प्रेम है अपने हिस्से के आसमान
से
वो अनंत दूरियाँ उसकी, जैसी कोई
अनकही बातें हो
सीमाएँ उसकी ऐसी, जिसे बाँध न सके
कोई भी
स्वतन्त्रता का वो अनजान एक प्रतीक सा
लगता है
हर कदम मैं जो बढ़ाती हूँ,
साये को उसके और भी धुँधला पाती हूँ ।
विशलता सिर्फ उसकी आकार नहीं,
अपने साये में छुपा ले ये दुनियादारी
हाँ मुझे प्रेम है अपने हिस्से के आसमान से

टीप - आसमान से आश्य मतलब यहाँ अपने जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य से है

2024-25

हम जैसे चलते हैं

लोकेश कुमार कोमारे
एम. ए. इतिहास
(I सेमेस्टर)

हम जैसे चलते है तुम भी चलो न ...
हम जैसे रहते है तुम भी रहो न ... ।

नदियां बहती है और सागर की ओर जाती है ...
सागर की ओर जाते जाते सागर ही बन जाती है ... ।

हम जैसे चलते है तुम भी चलो न ...
हम जैसे रहते है तुम भी रहो न ... ।

नन्हे नन्हे दीपक देखो, जगमग जगमग करते है ...
खुद को जलाकर ये अंधेरा दूर करते है...।

हम जैसे चलते है तुम भी चलो न ...
हम जैसे रहते हैं तुम भी रहो न ... ।

पत्थर की ये मूरत देखो, पहले तो ये पत्थर थी ...
घावों को सहते सहते कष्टों को सहते सहते ...
मूरत बन जाती हैं एक सूरत बन जाती है.।
हम जैसे रहते है तुम भी रहो न ...
हम जैसे चलते है तुम भी चलों न ... ।

कसूर ए जिन्दगी

भाविनी साहू
बी.एस-सी.
प्रथम वर्ष

इन हवाओ में मै ना जाने क्या राज
छुपाया है
बोलने पर जुबा पर एक जहर सा तैर
आया है
कैसे ही बयां करूँ इन लफ्जों से इन
मुस्कुराहाटों को
सुनने की चाहत नहीं रहती अब धड़कन
में
हवाओं में हलचल तो होती ही रहती है
पर तिनकों में भी अब प्यास न पाया है
हाँ कैद कर लिया उन आवाज़ों को ए
जिन्दगी
जिसने तुझे कसूर ए ताज पहनाया है
कसूर ए ताज पहनाया है

हिन्दुस्तान

सर्वप्रीत कौर
बी.एस-सी.
I सेमेस्टर

वीर शहीदों के रक्त के कर्ज़ पर,
आज ये देश आजादी का महापर्व मना रहा है।
गली गली, शहर, हर कस्बे में,
गर्व से तिरंगा लहरा रहा है।

एक तरफ चंद्रयान - 3 की सफलता का अभिमान,
और दूसरी ओर विश्वाविजयता कहलाने का उल्लास,
सीमा पार खड़े सिपाहियों पर रक्षा का अटूट विश्वास,
किसानों को अपनी फसल देख
आत्मनिर्भरता का आभास,
उद्योगों ने कराया राष्ट्र को प्रगति का एहसास।।
ये हमारे पूर्वजों के बलिदानों से रंगी माटी है,
जिससे अभस्ते अपने अनुभव और युवा नई ऊर्जा से सजाएंगे।
जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषाओं की भिन्नता के बावजूद,
अनेकता में एकता की शान के साथ
पूरे विश्व में अपना परचम लहराएंगे।।

इस देश के पास युवाओं के जोश का उबलता खून है।
गरीबी, भ्रष्टाचार, फरेब को पल में भस्म कर सके,
आंखों में सुलगता ऐसा जुनून है।।

साक्षरता हमारी ताकत और सद्भाव हमारे संस्कार,
आंखों में रखते लिहाज़ और वाणी में सम्मान,
कुछ वक्ता का महज़ और इंतजार,फिर पूरे विश्व में गूंजेगा ये फरमान,
कि प्रेम सम्मान, सद्भाव और प्रगति का नाम है
हिन्दुस्तान ।।

हाँ मैं एक छात्रा हूँ,...

हिमांशु साहू
बी.एस-सी.
V - सेमेस्टर

मैं एक छात्रा हूँ नाजुक फूल की कली हूँ।
वक्त की हर मार को दृढ़ता से सही हूँ।
हाँ मैं एक छात्रा हूँ, और डट कर खड़ी हूँ।
हाँ मैं एक छात्रा हूँ और डट कर खड़ी हूँ।
मैं भगवान की बनाई एक सर्वोत्तम कृति हूँ।
मैं उज्जवल भविष्य रूपी साड़ी में लगी एक
मोती की जरी हूँ।।
हाँ में एक छात्रा हूँ, और डट कर खड़ी हूँ।
मैं शिक्षकों के द्वारा बनने वाली कई नीति हूँ।
मैं भविष्य बनाने वाली युग की कई रीति हूँ।।
हूँ मैं एक छात्रा हूँ, और डट कर खड़ी हूँ।
मैं असंख्य नारियों के हाथों की जादू की छड़ी हूँ।
मैं राष्ट्र के निर्माण की एक नई कड़ी हूँ।।
हाँ मैं एक छात्रा हूँ, और डट कर खड़ी हूँ।
मैं अपने सपनों को पाने कई हालातों से लड़ी हूँ।
मैं अपने पापा की स्वर्णिम सोच की धनी हूँ।।
हाँ मै एक छात्रा हूँ, और डट कर खड़ी हूँ।

नारी : शक्ति और संवेदना

पीयुष कुमार साहू

बी.एस-सी.

(I - सेमेस्टर)

नारी का सम्मान करें, ये समाज की शान है,
उसकी शक्ति से ही जीवन सजीव ये जहान है।
हर नारी में दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती का वास है,
उसे समझे देवी का रूप, यही समाज का विकास है।

कोलकाता की गलियों में चीख, कहती एक दास्तान,
निराशा में घुटता समाज, भूल गया इंसान का मान।
निर्भया की वेदना, वो दर्द का घाव,
अभी भी पुकार रहा है, इंसानियत का अभाव।

समाज में जागरूकता लाएं, सुरक्षा का इंतजाम करें,
हर बेटी, हर नारी को, सशक्त और सक्षम करें।
हर, जगह हो रोशनी, अंधेरों से अब दूर रहें,
अपने अधिकारो को जाने, और अपनी रक्षा स्वयं करे।
हर नारी है शक्ति स्वरूपा, ये सभी को मानना होगा

बेटी तुम आगे बढ़ो, हर घर तेरे बिन सुना है,
तेरी राह कोई रोक न पाएं, तुझे आसमां छूना है।

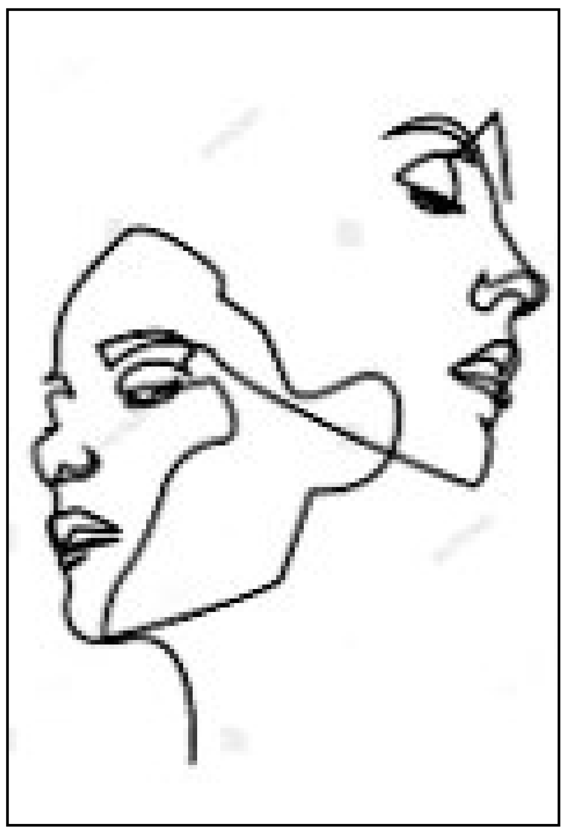

हमारा NNS परिवार

योगिनी देवांगन
बी.एस-सी.
(III - सेमस्टर)

हमारा NNS परिवार
का ये परिवार ,
एकता का प्रतीक है,
प्रत्येक स्वयं सेवक यहाँ,
आटो पहर जागरूक है,
समाज के विकास के प्रति,
सभी एक जुट है,
सीनियर्स और जुनियर्स का यहां रिश्ता अटूट है।
शुरूआत करते हैं हम अपने सुपर सीनियर्स से,
जो वक्त अपना निकालकर हमसे मिलने आते हैं
हर बार हमें कोई नई सीख सिखाते हैं
अपना अनुभव साझा कर, हमको राह दिखाते हैं
अविरल आगे बढ़ते रहने की, मन में उत्साह जगाते हैं।
जो चाहते हमसे,
हम अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक हो
देश और समाज में NNS के अव्वल नागरिक हो।
अब हमारे नए स्वयं सेवक-स्वयंसेविकाओं की
बारी है,
आज नए उन्नयनों में इनकी भी हकदारी है।
इनको है समझना,
हमारा NNS Unit हमारे
स्वयंसेवक स्वयंसेकिकाओं की साझीदारी है,
हर कार्य
में इनकी भागीदारी और हिस्सेदारी है।
एकता में जुट आगे बढ़ते चलना है,
आगे भी देश और समाज का उद्धार,
NNS का नाम रोशन करना है। हम NNS से जुड़ रहे,
परिंदों की तरह आसमाँ की ओर उड़ रहे
लोगों को एकता के सूत्र में जोड़ते चलना है
वसुंधरा को सुदंर बनाने, हर मुमकिन कोशिश करना है।
अंततः याद हमको रखना है,
कोई काम करे ना करे, करना पहल हमको है
आज और कल भी बनाए रखना, NNS का दल हमको है।

2024-25

मिसाइल मैन

लक्ष्मी नारायण
बी.एस-सी.
III - सेमस्टर

जब्सा था वो सन् 1931में।
करके मेहनत विज्ञान का नया रूप दिखलाया
चार भाई और एक बहन में सर्वश्रेष्ठ कहलाया था।
कर-कर प्रयास कई बार हार कर,
हार न उसने मानी थी।।

दे-दे र ताना लोगों ने खूब मजाक उड़ाया था।
अथक मेहनत और परिश्रम से,
उसने मिसाइल बनाया था।
उसे उड़ाकर होश दुनिया का, उसने उड़ाया था।
कर-कर प्रयास कई बार हार कर,
हार न उसने मानी थी।
तब जाकर मिसाइल मैंने नाम उसने कमाया था।
सर्वश्रेष्ठ पद बैठे गुरुवर वो कहलाया था।
भारत के अनमोल रतन में, वो एक अनोखा तारा था।
राष्ट्रपति के पद बैठे
भारत को राह दिखायी थी।
कर-कर प्रयास कई बार हार कर,
हार न उसने मानी थी।
तब जाकर मिसाइल मैन नाम उसने कमाया था।।

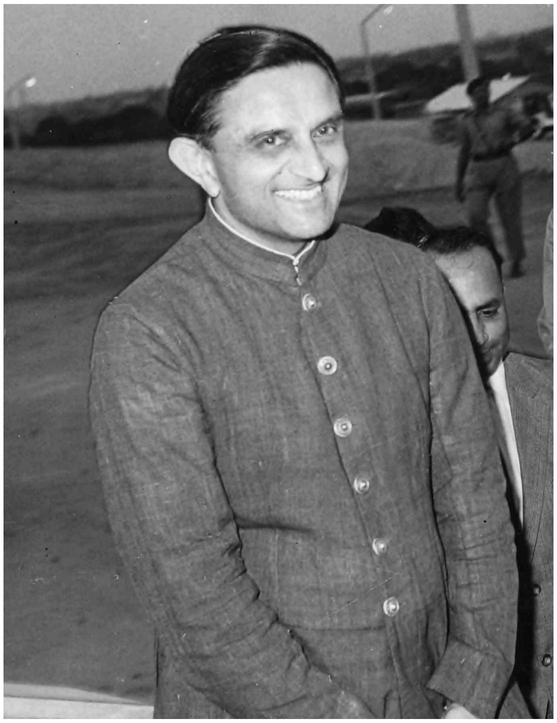

डॉ. विक्रम साराभाई

लक्ष्मी नारायण
बी.एस-सी.
III - सेमस्टर

सन् 1919 में, ऐसा दिन एक आया था।
अम्बाला जी के घर में,
खुशियों का माहौल जब छाया था।
12 अगस्त का दिन था वह,
जब गुजरात का लाडला आया था।
सरला और अम्बाला जी के,
आँखो में चमका एक सितारा था।
यह सितारा ऐसा चमका कि,
भारत को अंतरिक्ष की राह दिखाया था।
बैलगाड़ी और सायकल में ही,
जब रॉकेट को लेकर आया था।
21 नवम्बर 1963 को जब रॉकेट लॉन्च कराया था।
दुनिया के अंतरिक्ष दौड़ में भारत का मान बढ़ाया था।
नासा के साथ जब कद्म से कद्म मिलाया था।
दुनिया के कोने-कोने में भारत का परचम लहाराय था।
आसान नही था सफर इसरो की स्थापना का।
डॉ. विक्रम साराभाई यू ही नाम नहीं आया था।।

जीवन जीना सीखा है

साक्षी वर्मा

बीएस.सी.

(III - सेमेस्टर)

0 है नहीं अभिमान मुझमें, स्वाभिमान से जीवन सीखा है। देती हूँ सम्मान सभी दो, पर ना अपमान सहना सीखा है।

0 झुकती नहीं कभी गलत के आगे, ना गलत का साथ देना सीखा जिंदगी जीती हूँ अपनी शर्तां पर, ना सर झुकाकर जीना सीखा है।

0 गिरी हूँ कई बार लडख़ड़ाकर, तब संभलदर चलना सीखा है। ना बैठी कभी हार मानकर, मैंने निरंतर बढ़ना सीखा है।

0 ठोकरें लगी हैं कई बार, खुद दो संभालना सीखा है। मिले जिंदगी में कई बार धोखे, धोखों से सबक सीखा है।

0 बिखरती नहीं मैं मुसीबतों से, मुश्किलों से लड़ना सीखा है। मजबूत है मेरे हौसले, चट्टानों से टकराना सीखा है।

0 ना तोड़ती मैं भरोसा किसी दी, मैंने उम्मीद जगाना सीखा है। ना दरना चाहती दुखी दिसी दो, मैंने रोते दो हंसाना सीखा है।

0 निराशा में भी आशा रख दर, मैंने जीवन जीना सीखा है। है नहीं अभिमान मुझमें, स्वाभिमान से जीना सीखा है।

नारी सशक्तिकरण

राहिनी साहू
बी.एस-सी.

नारी ल नरई झन समझो नारी के कई रूप हे,
नारी के बिना हर मनखे के जिनगी कुलुप हे।
कही बेटी के रूप त कही महतारी के रूप हे,
कही बहू के रूप त कही नारी के रूप हे।
नान्हें रिहिस न बेटी कहाई स,
घर-कुरिया म अंजोर बगराइस,
पढ़िस लिखिस नाम कमईस
अउ चन्दा म जाके झण्डा गड़ाइस।
इही भारत के तो बेटी हर जो कलपना चावल कहाइस,
बेटी तो उहू हरे जे अकाश म उडात हे
रफेल फाटिर जेट चलाई
इही भारत के शेरनी हरे
जो शिवांगी सिंह कहलात हे,
रानी लक्ष्मी रानी दुर्गावती
ऊऊँ मन तो नारी रिहिस।

सौ-सौ अंग्रेजी के आगू म
एक अकेली भारी रीहिस,
पी.टी.उषा अऊ हिमादास
जइसे इहा धाविका है।
मनुभाकर और विनिश फोगाट
ने भी भारत की मान बढ़ाये हे।
हमर छग म घलोक तीजन बाई
जइसे पण्डवानी गायिका हे।
हर पोस्ट हर जॉब म देख तो
महिला आरक्षण लागू हे।
आज नारी अबला नई हे
नारी घर के शान हे
हर नारी के सम्मान करो
नारी जग म महान हे।

2024-25

भारतीय बाजार और डिजिटल पेमेंट

मनीष कुमार
बी.एस-सी.
III - सेमेस्टर

डिजिटल पैरामीटर और यूपीआईः भारत में भुगतान क्रांति की दिशा

(Information Technology)

आज के समय में पूरी दुनिया की इकोनॉमी नगद भुगतान को छोड़कर डिजिटल पेमेंट यानी कैशलेस लेनदेन पर ध्यान दे रही है। इस होड़ में दुनिया के कई बड़ी अर्थव्यवस्था, एवं सारे विकसित देश लगे हुए हैं ताकि आधुनिकीकरण के इस युग में मुद्रा का लेनदेन भी आधुनिक तरीके से हो सके। सौभाग्य से इस मामले में हमारा भारत देश सबसे आगे है।

आज भारत के पास इस विषय मे अपना खुद का बनाया और विकसित किया गया संसाधन है जिसकी बदौलत आज भारत देश कैशलेस पेमेंट के मामले में पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर जिसकी बदौलत भारत को यह स्थान मिला है वह क्रांति है UPI ''भारत में हमारे पास दुनया का सबसे परिष्कृत सार्वजनिक बुनियादी ढांचा है। लेकिन, यह केवल भुगतान ही नहीं है जो क्रांति का हिस्सा है, बल्कि बैंकों का एक नया समूह आ रहा है।''

''रघुराम जी राजन (पूर्व आर.बी.आई. गवर्नर)''

UPI का अर्थ होता UNIFIED PAY-MENTS INTERACE

यूनिफाईड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) एक ऐसी प्रणाली है जो कई बैंक खातों को एक ही मोबाइल एप्लीकेशन (किसी भी सहभागी बैंक का) में जोड़ती है, जिससे कई बैंकिंग सुविधाएँ, सहज फंड रूटिंग और मर्जेंट भुगतान एक ही जगह पर मिल जाते हैं। यह 'पीयर टू पीयर' संग्रह अनुरोध को भी पूरा करता है जिसे आवश्यकता और सुविधा के अनुसार शेड्यूल और भुगतान किया जा सकता है। उपरोक्त संदर्भ को ध्यान में रखते हुए, एनपीसीआई ने 21 सदस्य बैंकों के साथ एक पायलट लॉन्च किया। पायलट लॉन्च 11 अप्रैल 2016 को मुंबई में आरबीआई के गवर्नर डॉ. रघुराम जी राजन द्वारा किया गया था। बैंकों ने 25 अगस्त, 2016 से अपने यूपीआई सक्षम ऐप को गुगल प्ले स्टोर पर अपलोड करना शुरू कर दिया है।

यूपीआई की सेवा के लिए हम गूगल प्ले स्टोर पेमेंट मोबाईल एल्पीकेशन का सहारा ले सकते हैं Phone-पे, googlepay, payTm, Bhartpay

2024-25

जैसे प्लेटफार्म प्रमुख है जो भारतीय ग्राहकों की प्राथमिकता मैं बने हुए हैं और भारतीय ग्राहकों के अनुरूप प्रदर्शन देने में सफल रहे हैं।

डिजिल पेमेंट के फायदे एवं नुकसान ।

डिजिटल पेमेंट से फायदे बहुत है परंतु इसके कुछ नुकसान भी है। अगर बात की जाए तो डिजिटल पेमेंट एक तीव्र प्रक्रिया है यदि हम डिजिटल पेमेंट का उपयोग करते हैं तो हमें हमेशा अपने साथ पैसे या पर्स लेकर जाने की आवश्यकता नहीं है। हम अपने मोबाइल फोन से कैशलेस भुगतान कर सकते हैं जिससे खरीदारी करना काफी आसान हो जाता है तथा कैशलेस भुगतान पर हमें कई बार, विशेष छूट तथा कैशबैक के फायदे भी मिलते हैं। डिजिटल पेमेंट हमारे लेनदेन की प्रक्रिया को आसान बना देता है। और यदि इसके नुकसान की बात की जाए तो कई बार देखा गया है कि डिजिटल पेमेंट में ग्राहक साइबर और निजात की पारदर्शिता एवं वित्तीय जोखिम के शिकार भी हो चुके हैं जिस कारण ग्राहकों का विश्वास डिजिटल पेमेंट से उठ जाता है और वह डिजिटल पेमेंट की सुविधा को टाल देते हैं।

भारतीय बाजार और डिजिटल पेमेंट....

डिजिटल भुगतान के मामले में भारत लगातार शीर्ष स्थान पर बना हुआ है। दुनिया में होने वाले डिजिटल भुगतान में से 46 प्रतिशत डिजिटल भुगतान अकेले भारतीय बाजार में होता है यानी यह कहना गलत नहीं होगा की डिजिटल भुगतान में भारत पूरे विश्व का नेतृत्व कर रहा है और यह भारत की अर्थव्यवस्था के लिए बेहद क्रांतिकारी विषय हो सकता है क्योंकि जिस बाजार में लेनदेन आसान होगी व्यापार भी वही विकसित होगा।

ध्यान रखने योग्य बातें

डिजिटल भुगतान में ध्यान रखने योग्य सबसे बड़ी बात यह होगी। हम पेमेंट के लिए जो भी एप्लीकेशन या माध्यम उपयोग में ले रहे हैं वह भरोसेमंद और मान्यता प्राप्त तथा प्रशासन द्वारा पंजीकृत हो अन्यथा बाजार में कई फर्जी पेमेंट एप्लीकेशन भी है जिनसे व्यक्ति जोखिम का खतरा बना रहता है। डिजिटल भुगतान के चलते हम अकसर जरूरत से अधिक खर्च करने लगते हैं। इसलिए यह बात ध्यान में रखने योग्य है की हम अपने खर्चे पर नियंत्रण रखें और अनावश्यक खर्च न करें क्योंकि हाथों से नगद की रकम जाने और डिजिटल रकम जाने के बाद के मनोवैज्ञानिक विचारधारा अलग होती है जिससे अनियंत्रित खर्च हो जाता है।

ग्राहकों को सुझाव

ग्राहकों को व्याक्तिगत सुझाव यही रहेगा की वह दुनिया भर की व्यर्थ की अफवाहों से बचें और जागरूक होकर सतर्कता से इस सेवा को अपनाकर एक विकसित अर्थव्यवस्था और विकसित राष्ट्र बनाने के इस मिशन में भारत सरकार के प्रति एक प्रमुख भागीदारी निभायें।

''डिजिटल पेमेंट से करें अपनी खरीदारी, सुरक्षा और सुवधा की हो तैयारी ।''

सुनो सबकी करो अपने मन की

जया तिवारी
बी.ए.
I - सेमस्टर

मेरा लेख उन विद्यार्थियों के लिए है जिन्होंने अपना लक्ष्य तय नहीं किया हैं या फिर समाज एवं पारिवार के दबाव में आकर अपना चयन बदलते हैं, अपने लक्ष्य का गला घोटकर लोगों के मुताबिक चलते हैं। यह मैंने इसलिए लिखा है क्योंकि मेरे जैसे कई विद्यार्थी हैं जिन्हें ऐसी समस्याएं हैं। मेरा स्कूल जीवन समाप्त हो गया है और मैं 18 वर्ष में प्रवेश कर चुकी हूं। अब बात आती है मेरे स्नातक के पढ़ाई की तो मैं बहुत भ्रम में थी मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं आगे स्नातक की पढ़ाई कैसे, किस विषय का चयन करके करूं। मैं बहुत लोगों से सलाह ली। सबने अलग-अलग मेरे सामने विकल्प रखे। मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि आगे क्या करूं, किस लाईन में जाऊं।

हालांकि मेरा लक्ष्य तय था कि मुझे यू.पी.एस.सी क्लियर कर ऑफिसर के पद पर नियुक्त होना है। पर इस स्नातक की डिग्री में समझ नहीं आ रहा था क्या करूँ कोई बोलता है - इंजीनियरिंग करो, तो कोई फार्मेसी, तो कोई टीचर, तो कोई बीएससी करने बोला। फिर मैं सुनी सबकी पर करी अपने मन की यदि मुझे अपने लक्ष्य के लिए सीधा मार्ग मिल रहा है तो घूम के क्यों जाना।

मैंने अपने में सोचा कि यदि मैं इंजीनियरिंग करती हूं तो इन चार सालों में मैं अपने लक्ष्य की तैयारी नहीं कर पाऊंगी। जिस प्रकार अर्जुन ने मछली की आंख को अपना लक्ष्य बनाकर उस पर बाण चलाया ठीक उसी प्रकार हमें भी एक लक्ष्य बनाकर मेहनत करना है। समझिए हम अर्जुन है और हमे मेहनत रूपी बाण चलाना है।

हँसना मना है

प्रखर शर्मा
एम.ए. इंग्लिश
I - सेमेस्टर

मेरे एक मित्र है, हर एंगल से विचित्र है। एक दिन मुझे स्टेशन पर मिल गये, देखते ही रोने लगे। आसुँओ से मेरे कपड़े भीगोने लगा।

मैंने पूछा, क्या हो गया भाई, कहने लगे, महंगाई और बेईमानी ने ऐसा मारा पंजा, फिल्मी हीरो अनुपम खेर की तरह कर दिया गंजा, कभी सर पर भी बरगद के समान बाल थे, लोग कहते थे बेमिसाल थे।

0 0 0

एक दिन घर की सफाई करा रहा था, कि अचानक मेरे कॉलेज के जमाने का एक चित्र फिसलकर गिर पड़ा, जो मेरे छोटे लड़के को मिल गया, उसने अपने मम्मी से पूछा, मम्मी ये किसकी है तस्वीर? पत्नी बोली, बेटे ये तेरे पापा रणवीर सिंह की है तस्वीर ।

लड़के ने घूर जो बात कही, मेरी पत्नी से, वो मुझे आज भी याद है, लड़का बोला अगर ये मेरे पापा है, तो घर पर जो गंजा रहता है, वो कौन है?

भूल

प्रखर शर्मा
एम.ए. इंग्लिश
III - सेमेस्टर

एक बार रात में सोया था खाट में। किसी ने मेरा गेट खटखटाया, मेरी बीबी ने मुझे हिलाया। बोली देखो कौन आया। मैं करवट बदलता हुआ कुनमुनाया, कहा तुम ही देख लो कौन आया।

मेरी बीबी ने दरवाजा खोला।

आने वाला बोला।बच्चे कहां गये? तुम मेरा अकेली इन्तजार करती हो, तुम ही जो मेरा राह निहारती हो। बीबी बोली कौन है आप? वह बोला अरे भूल गई, मैं तुम्हारे पाप्पू का बाप, पहचाना नहीं भागमती, मैं हूं तुम्हारा पति यह वार्तालाप मेरे कानों में गई, नींद का नशा हवा हो गया। मेरी बीबी अपने आप को कहती है सती, परन्तु इसके दो-दो पती उनकी वार्तालाप जारी थी। अब मेरी बीबी की बारी थी,

बीबी बोली, आप मेरे पति, फिर अन्दर कौन सो रहा है हिलाने पर टस से मस नही हो रहा है

तब तक मैं भी आ गया उठकर, गरजा उस पर डटकर कौन है वे? कहाँ से आया? या नशे में गेट खटखटाया। वह बोला ना मैं घर भूला, ना नशे में आया हूँ। मैं अपने ही घर आया हूँ। पर तुम कौन, जो रोब दिखा रहे हो, मेरे घर में मुझ पर ही चढ़ जा रहे हो। इतने में श्रीमती ने चिराग जलाया मुझे उल्टा आसमान नजर आया। मैं शर्म से हो गया पानी-पानी अब आगे की सुनो कहानी।

रोशनी में देखा मुझे मेरा पड़ोसी नजर आ रहा था। और वह उसकी बीबी थी जिसे में अपने कहा जा रहा था ।

मैंने अपना सिर हिलाया, मुझे कुछ-कुछ याद आया। शाम के मैं नशे में मदहोश था। मदहोशी का जोश था।

जोश में होश खो गया, और पड़ोसी के घर में सो गया।

घर वह नहीं मैं भल गया था। मैं बोला सॉरी।

सॉरी के बच्चे, दूसरे के घर पर कब्जा दिखाता है, लुच्चे।

मैंने कहा भूल हो गई भूल, कोई अपना घर भूल जाता है, इतने बड़े अपराध को भूल बताता है। पुलिस को बुलाऊँगी। मैं गिड़गड़्या । उसने समझाया। भूलने को आप बड़ा जुर्म कहते हो। पर इसको लगो अक्सर करते हैं। मैं तो सिर्फ घर भूल गया, लोग गाँव भूल जाते हैं, जहाँ पैदा, हुए खेले खाये, वह भूल से जाते हैं। जिस माँ ने जन्मा पाला पोसा, उस माँ को भूल जाते हैं। जिस बाप पसीना एक करके, पढ़ाया लिखाया उस बाप को भूल जाते हैं, और ने नशे में नहीं भूलते है पूरे होश हवास में,

वह बोला तारा चन्द जी, तर्क तो बड़े अच्छे हैं, जाओ छोड़ देता हूँ, क्योंकि तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे है। दूबारा नशा नहीं करना वरना, पछताओगे सीधा जेल जाओगे।

उसी समय कसम खाई, नशा नहीं करेंगे, आप लोग भी नशा न करने की कसम खायें और नशे से अपना विनाश होने से बचें।

2024-25

छत्तीसगढ़ी व्यंजन बचाये खातिर

राखी भारती
अतिथि प्राध्यापक
(राजनीति विज्ञान)

छत्तीसगढ़ी हमर माटी के सुगंध ह, हमर पहिचान ह, अऊ हमर संस्कार के सजीव प्रतीक एखर व्यंजन ह हमर संस्कृति के सोंधापन ल परगट करथे, फेर आज के आधुनिकता के दौर म, छत्तीसगढ़ी व्यंजन म धीरे-धीरे पराएपन के आघात परत हावे अतका म काम करे के जरूरत हवे, के हमन अपन छत्तीसगढ़ी व्यंजन ल बचाए अऊ अपन भविष्य पीढ़ी ला एखर महत्व समझाए।

छत्तीसगढ़ के परंपरागत व्यंजन, वैईसे - फरा, चीला, चौसेला, ठेठरी, खुरमी, सोहारी, ऐरसा आंता अऊ बोरे बासी ये सिरफ खाय-पीए कै चीज नई हंय, बल्कि हमर रीति रिवाज परंपरा अऊ जैविक जीवन के हिस्सा आय ये व्यंजन मन के स्वाद अऊ पोषण के संग साथ फरा म दाल-चावल दे मेल, खुरमी म गुड़ अऊ चावल दे मिठास अऊ बोरे-बासी म दही दे सादगी ल परगट दरथे।

फेर आज के समय म जइसे पश्चिमी संस्कृति ह अपन पांव पसारत हावे तैसने छत्तीसगढ़ी व्यंजन ल छोड क़े लोगन मन फास्ट फूड अऊ बाजारू चीज मन के तरफ बढ़त हवंय येखर सेहत म बुरे असर पड़त हावे अऊ हमर संस्कृति ला भी हानी होवत हावे

छत्तीसगढ़ी व्यंजन ला बचाए खातिर जरूरी हावे के हमन अपन घर म अऊ परिवार म ये व्यंजन मन ला बनावन अपन बच्चा मन ला एखर महत्व बतावन अऊ स्दूल अऊ समान म एखर प्रसार दरन। सरदारी अऊ सामाजिक संगठन मन ला भी आगू आके छत्तीसगढ़ी व्यंजन दे मेले, प्रतियोतिगा, अऊ प्रचार-प्रसार दराए दे जरूरत होवे।

हमन अपन परंपरा ला बचाहू तबे हमर छत्तीसगढ़ी पहिचान टिदे रही। छत्तीसगढ़ी व्यंजन सिरिफ खाय-पीए के साधन नई हे, ये हमर माटी के आन-बान अऊ शान आय अपन छत्तीसगढ़ी व्यंजन ला। संजोय के राखबो अऊ एदर महद ला हर दोना म पहुंचाबो। -

महकथे माटी दे गमक, बइला दे साथ
बोरे बासी दे मिठाय, हर रोज दे बात
फरा-चीला दे स्वाद, सादा जिनगी दे गीत
ठेठरी खुरमी संग, संगी जोड़ी दे मीत।

2024-25

गुड़ चावल संग बनथे, खुरमी दे मिठाई
परंपरा दे झलक दिखावथे, अम्मा दे अच्छाई
आंता दे सोंधापन, खाए दे मन ल सुखावे।

कहां गइस वो ठेठ स्वाद, कहां गइस वो ठिकाना
फास्ट फूड दे चकाचौंथ म खोवत हे अपन खनाना

सावधान हो, ओ संगी, अपन पहिचन ला बचाबो,
छत्तीसगढ़ी व्यंजन ल अगली पीढ़ी तद पहुंचाबो।

फरा होय या बोरे बासी, सब म संस्कृति दे बान,
ये ह सिरिद भोजन नइ ये हमर माटी दे आन।

सुरक्षित रखन ये परंपरा, संकल्प हर घर म होवय
छत्तीसगढ़ी व्यंजन तबे तो हमर छत्तीसगढ़ ह
छत्तीसगढ़ी बचाही।

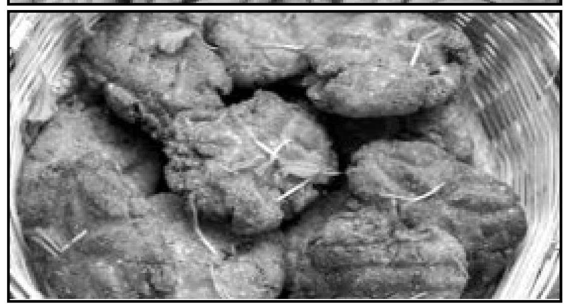

धर्म

डॉ. अनुपमा कश्यप
प्राध्यापक (रसायन)

नमस्त दीदी, गुडमार्निंग दादी दरती हुयी चहक भरी आवाज से वह अंदर आयी - चरण। चरण नाम सुनकर मुझे लगा नहीं दि वह क्रिश्चियन है पर यह सच था कि वह कन्वर्टेड क्रिश्चियन थी। छरहरी देह, ब्लैक ब्यूटी, स्माइलिंग फेस लिये फुर्तीली। यह चरण मेरी छोटी बहन और माँ के घर नर्सिंग सेवा के लिये आती है, माँ ने जबसे बिस्तर पकड़ा है वह सुबह दे क्रियादलाप के लिये रोजाना 7 से 8 दे बीच आकर माँ को बच्चो दी तरह तैयार करके उनको एक्सरसाइज कराती हाथ पकडक़र बरामदे के चक्कर लगवाती। वह एक प्राइवेट अस्पताल मे नर्स है। मन लगाकर अपने कर्तव्य का निर्वहन करती।

माँ उसकी सेवा से पूर्णतया संतुष्ट रहती। मैं जब वहाँ थी तो एक दिन चरण आयी उसके हाथ में तुलसी का पौधा था। वह छोटी बहन को गिफ्ट करते हुये बोली - ‘‘दीदी यह तुलसी का पौधा आपके लिये है मैंने इसे नहाकर उखाड़ा है। जून की तपती हुयी गर्मी में भी हरा भरा तुलसी का पौधा देखकर उसके चेहरे पर निश्छल भाव और आंखों में चमक थी। हमने खुश होते हुये कहा - वाह। चरण यह तो बड़ा नायाब तोहाफा है। तुम इसे अपने हाथों से गमले लगा दो।

वह चुप हो गयी पर नीचे जाकर गमले में मिट्टी भरकर लायी और मुझसे कहने लगी। दीदी । गमला तैयार है पौधा आप लगा दो। मुझे समझ में आ गया दि वह इस संकोच में है कि पौधा उसके हाथ से लगाना हमें रास आयेगा या नहीं क्योंकि वह हिन्दू नहीं थी। मैंने उसके मनोभाव को समझते हुये कहा - जब तुम हमारे लिये अपने घर से तुलसी का पौधा ला सकती हो तो अपने हाथ से लगा क्यूं नहीं सकती। मैंने अधिकार पूर्वक कहा - तुम इतने प्यार से लायी हो, तुम ही लगाओगी। मेरे कहने पर वह उत्साह से भर गयी और तुरंत पौधा लगाकर मुझे दे दिया।

तुलसी का गमले में लगा पौधा हमसे पूछ रहा था - कहाँ आड़े आया धर्म। यह धर्म मानव का बनाया हुआ है- हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई। पर ईश्वर ने तो एक ही धर्म बनाया है - मानवता का धर्म प्रेम का धर्म।

चरण ने इसी धर्म का निर्वाह दिया।

2024-25

प्लास्टिक की समस्या

वाणी वर्मा
बी.एस-सी. -3

सुविधा हमारे लिए दुनिया का रूप भी ले सकती है अगर हमने समय रहते सुविधा के साधनों से होने वाले समस्याओं का समाधान न किया। आज प्लास्टिक हमारी प्रतिदिन की आवश्यकता विनाश की वस्तु, चॉकलेट का रेपर हो फिर डायनिंग टेबल, प्लास्टिक हर रूप में हमारे घर में पैर धोकर बैठ चुका है दूसरी तरफ इसकी कम कीमत मजबूती और टिकाऊपन के कारण हम भी इसके कायल होते जा रहे हैं। प्लास्टिक का प्रयोग लगभग हर चीजों में होना पर्या के लिए बहुत बड़े खतरे की निशानी है। प्लास्टिक बायोडिग्रेबल ना होने कि वजह से इसके अणु मृदा की उर्वरक क्षमता दो नष्ट दर देते है। प्लास्टिक जलीय व थलीय दोनों जीवों के लिए भी बहुत खतरनाक है क्योंकि कचरा निष्कासन पद्धति में कचरे को या तो शहर से दूर किसी निर्जन जगह पर फेंक दिया जाता है या फिर समुद्र में। कहीं-कहीं शहरों के गली-कूचों में ही कचरे का ढेर लगा रहता है, जहां चौपाएं जानवर फेंदी हुई खाद्य सामग्री दे साथ प्लास्टिक भी खा जाते हैं जिस वजह से उनकी मौत समय से पहले हो जाती एक प्रतिष्ठित गैर सरकारी संस्था ने रिपोर्ट जारी दी है कि भारत में सालान लगभग 120000 जानवरों की मौत प्लास्टिक खाने की वजह से होती है। समुद्र प्लास्टिक के होने से जलीय जीवों को श्वसन क्रिया में समस्या होती है और इस प्रकार पारिस्थितिकी में असंतुलन आता है।

प्लास्टिक का रौद्र अब केवल जानवरों तक ही सीमित नहीं बल्कि हमारे खाने में भी अंडे, चावल, सेब आदि के रूप में आने लगा है । कुछ खोजपरक पत्रकारिता ने ऐसा कई मामलों का खुलासा दिया है जिसमें खाद्य सामग्री में प्लास्टिक के अंश पाये गये हैं। विज्ञान ने यह भी प्रमाणित कर दिया है कि अब प्लास्टिक उत्तम कोटि का न हो तो उसमें रखी हुई चीजें एक निश्चित समय के बाद अपनी पौष्टिकता खो देती है।

इस समस्या से निजात पाने दे लिए हमें सरकार पर ही निर्भर न रहकर अपनी ओर से भी कदम बढ़ाना होगा और यथासंभव प्लास्टिक के प्रयोग को कम करना होगा। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने संकर पद्धति की सहायता से ऐसे कीड़े की खोज कर ली है जो भोजन के रूप में प्लास्टिक खाते हैं। हालांकि, यह केवल शुरूआत है अगर इस खोज में सचमुच विकास हुआ तो प्लास्टिक की समस्या काफी हद तक सुलझ सकती है।

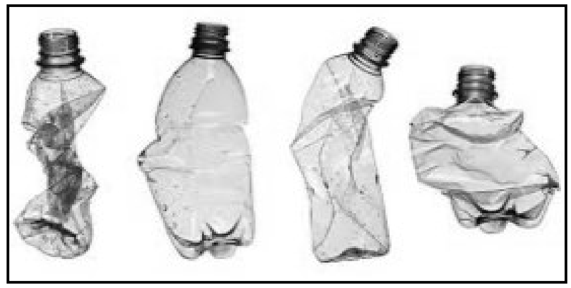

भूत से भिड़ गया

जनेन्द्र कुमार दीवान
विभागाध्यक्ष
(संस्कृत विभाग)

उस समय रात के बारह बजे होंगे। अचानक बिजली चली गई, काफी देर तक नहीं आई, नींद खुल गई थी सबकी। हमारे छात्रावास में कुछ 15-20 लोग एक कमरे में रहा करते थे। उस समय संभवतः 15-16 बरस के रहे होंगे। काफी इंतजार के बाद भी जब लाइट नहीं आई तो लोग बाहर निकल कर देखने लगे, तभी होस्टल के पीछे से अजीब-अजीब सी आवाजें आने लगी, सब लोग डर गए। छात्रावास अधीक्षक ईश्वर जो मेरे मित्र थे, उन्होंने बताया कि इसके पीछे मरे हुए लोगों को दफनाया गया है इसलिए वो लोग डरा रहे हैं। सुनकर सबकी हालात पतली हो गई, सब एक दूसरे का मुँह ताकने लगे, कुछ लोग इस बात को नकारने लगे दि भूत प्रेत होते हैं। इस पर बहस भी होने लगी। पर रात के समय, अंधेरा सबको डरा ही देता है । तब तर्क वितर्क काम नहीं आता। तब काम आता है चुप रहना या पतली गली से निकल लेना। उस समय पलायन ही शोभा देता है। इतने में जोर से खिड़की पर किसी ने प्रहार दिया। ...धम्म धम्म धड़ाक ... सबकी सिट्टी पिटी गुम...। जो खिड़की दे पास सोता था वो बंदर की तरह उछलकर भागा वहां से। ... अब क्या दिया जाए...

इतने में उधर से देखा तो आग के जलने का दृश्य भी दिख रहा था... जल्दी जल्दी में यहाँ भी वहां आंग की लपटें दिख रही थी। कुछ के तो जिगर ठंडे हो गए थे। कुछ तो दुबक के बैठे थे। अब धीरे धीरे सब शांत होता गया। अचानक सब दुछ बंद हो गया। पर सन्नाटा और अंधेरा अपना प्रभाव बनाए रख रहे थे। शायद वो अपना वजूद दिखाना चाह रहे थे।

क्या हुआ ?

कैसे हुआ ?

कहां गया ?

क्या था, यही सवाल सब किए जा रहे थे। एक दूसरे से...।

थोड़ी देर बाद किसी किसी में अचानक हिम्मत आई, बोले देखते हैं क्या है?

कुछ लोग रोके जा रहे हैं पर सुने कौन? कुछ लोगों ने जबर्दस्त दरवाजा खोल दिया। पर उसका परिणाम क्या होगा किसी ने सोचा नहीं था। दरवाजा खुलते ही कोई खाली भयंकर आकृति कुछ चार सौ

मीटर दी दूरी में पेड़ के नीचे खड़ी आग उगल रही थी। देखते ही सब हक्के बक्के रह गए। देखने वालों ने बाकियों को बताया तो डरे सहमें सब जिज्ञासावश देखने लगे पर उन्हें धीरे से आभास हुआ कि वो आकृति भी उन्हें देख रही है। फिर समझदार छुपने दी जगह तलाशने लगे।

अब ये क्या?

दूर खड़ी वह परछाई बड़ी तेजी से हमारी ओर बढने लगी। अब सभी डर से थर-थर कांपने लगे। एक दूसरे के ऊपर कूदते फांदते हुए सब भागने लगे... सबसे आगे वही था जो बहादुरी की बातें किया करता था और सबसे पीछे मैं बच गया...।

अब सब डर से चिल्लाए, दरवाजा बंद कर लो।

किसी की हिम्मत नहीं कि दरवाजा बंद करे। बचा मैं तो मैं जल्दी से आगे बढा लेकिन डर से मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं वह दरवाजा बंद नहीं दर सका ।

इतने में वह काली परछाई मेरे सामने खड़ी थी ।

मैं भी उसके सामने खड़ा था... मेरे दोस्त दुम दबाकर भाग निदले थे।

कोई मदद के लिए नहीं आया।...

मेरे हाथ पांव कांप रहे थे। जुबां से कुछ निकाल ही नहीं रहा था...। फिर

आप सभी सोच रहे होंगे कि ये तो गया। मुझे लगा कि कही बेहोश न हो जाऊं, लेकिन उस समय मुझे कुछ भी समझ नहीं आया और मैं डर और गुस्से में उस काली परछाई से भीड़ गया। आप यकीन मानिए उस समय मैं मैं नहीं रहा। मेरे हाथ अपने आप उठ गए और सीधा उस भूत दे साथ भीड़ गए...। सुना था कही कि बिल्ली को जब कहीं भागने का रास्ता न मिले तो सीधे आक्रमण करती है। यही मैं कर गया। मेरे पास और दोई दूसरा रास्ता नहीं बचा था सो टकरा गया.... मुझे अहसास हुआ भूत तगड़ा है, उसने एक बार मुझे झटक दिया पर रास्ता नहीं बचा था सो टकरा गया। ... मुझे अहसास हुआ भूत बहुत तगड़ा है, उसने एक बार मुझे झटक दिया पर मैं भी जिद्दी ठहरा, इस बार उस भूत के मुकुट पर मजबूत और कसरती हाथ जा टिके इस बार वो चुंबक की । मुझे अहसास होने लगा दि ये भूत मजबूर हो चला था...। मैंने कसदर मुकुट को पकड़ा रखा था तो वो उसे छुड़ाने में लगा हुआ था उसने एद बार धक्का दिया तो मैं टस से मस नहीं हुआ, अगली बार उसने पूरा जोर लगाया और इस बार हम दोनों झगड़ते हुए एद अलमारी में रखे पेटी

दे ऊपर टदरा गए इससे पेटी नीचे गिर गई ... धड़ाम से। उसदे साथ वहां रखे बर्तन भी गिर पड़े। अब उनदी आवाज जोर से आने लगी। इसी के साथ मेरे हाथ उसके मुकुट से निकल गए। मैंने पूरी कोशिश की कि वो मुकुट मेरे हाथ आ जाए पर वो नहीं आ पाए। इसी के साथ वो भूत वहां से भाग निकला...। ये गया वो गया... ।

उसके जाते ही बहुत से लोग बोल रहे थे कि वो भूत नहीं था... तो कौन था। ... मुझे भी एहसास हुआ कि वो भूत नहीं था।

ंमेरे मित्र इसदे बाद लड़ने लगे।

जिसकी पेटी टूट गई वो भी मुझसे लड़ने लगा। कि तुम उसे कीद कराकर दोगे। मैं सोचने लगा कि भूत से लड़ा हूं मुझे तो शाबाशी मिलनी चाहिए ।

खैर बताना चाहूंगा कि वो कोई भूत नहीं था। असल में बच्चे रात को अपने घर न भागे जाया करते थे इसलिए उन्हें डराने के लिए ऐसा आयोजन किया गया था। कि बच्चे रात को अपने घर न भागे तथा छात्रावास में ही रहे। जिससे कोई अनहोनी न हो।

पर मैंने महसूस दिया कि उस रात भूत के साथ लड़ाई में मेरे एक हाथ में ज्यादा ही चोट आई थी। दोस्त भी बड़बड़ाते हुए सोने की दोशिश करने लगे, दुछ लोग एक दूसरे की कायरता पर हंस रहे थे तो कोई मेरी तारीफ दर रहे थे।

अंजाने में रोमांच से भरी रात गुजारने का मजा ही कुछ और रहा।

खास कर जब आपके पास कोई बड़े न हों, आपके मां बाप न हो।

केवल किशोरवय लडक़पन के दोस्त आपके साथ हों जिनके साथ आप जिंदगी के कुछ सबक सीखते हों, संघर्ष सीखते हों, अकेले ही लडते सीखते हों।

थैंक यू जिदंगी।

लव यू।

मिस यू ऑल माय डियर फ्रेंड्स ।

क्रमशः .... जो मेरे क्लासमेंट दोस्त ... इस रात मेरे साथ वे लाइक्स दबाएं और मैसेज करें।

अब उन्हें कौन बताएं मैं यहां कोई हीरो वीरो नहीं था। यहां भी वही स्थिति थी कि कुएं में कूदकर किसी ने किसी की जान बचाई फिर बाद में पता चला दि उसे किसी ने गलती से धक्का दे दिया था। खैर।

आज भी उस घटना को याद कर आज भी मन हंसता है, उस यादगार सफर को कौन भूलना चाहेगा।

गुम होती युवा पीढ़ी

वैदेही

बीएस.सी. आई.टी

(द्वितीय सेमेस्टर)

आज के दौर में विज्ञान ने जिस तरह प्रगति की उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी लेकिन इस प्रगति की सबसे गहरा असर आज की युवा पीढ़ी ही पर पड़ा है। युवा जिसकी कल्पना हम देश के विकास, प्रगति के लिए करते है वहीं युवा आज विज्ञान की तमाम सुविधाओं को पाकर आलसी बनता जा रहा है। युवा जो अपने विभिन्न कार्यों से इतिहास रचता है, उसी का आज भविष्य गुम होता जा रहा है।

राज्य की युवा पीढ़ी तकनीकी का इतना उपयोग कर रही है कि वह अपने सारे कार्यों के लिए तकनीकी के ही अधीन हो गयी है। अपने सारे कार्य जैसे - कपड़े लेना हो, तो आनलाईन शॉपिग, किसी प्रकार के कार्य को करने के लिए आज की युवा पीढ़ी पूर्ण रूप से तकनीक पर आधीन होती जा रही है। तकनीकी का विकास बहुत ही उपयोगी है, परंतु हर छोटे से छोटे कार्यों के लिए इस पर अधीन होना, यह तो बहुत ही चिंता का विषय बनता जा रहा है।

आजकल जहाँ देखो वहाँ युवा मोबाईल फोन के इस्तेमाल में इतना लीन हो गया है कि उसे अपने भविष्य की चिन्ता ही नहीं है। आजकल युवाओं का अधिकतर समय मोबाईल फोन के इस्तेमाल में ही चला जाता है।

युवा अपने जीवन के स्वर्णिम समय की कदर न कर दुनिया की चकाचौध में उलझा हुआ है। आज जहाँ देखो वहाँ युवा अपने आप को सर्वश्रेष्ठ दिखाने के चक्कर में पड़कर हक से ज्यादा दिखावा कर रहा है। युवाओं के अंदर की ज्वाला आवश्य होनी चाहिए जिसे अपने देश के लिए, अपने समाज के लिए व अपने परिवार वालों के लिए कुछ कर गुजर जाये। आज के युवा ने ऐसी ज्वाला हमे देखने को नहीं मिलती है।

2024-25

युवाओं के लिए यह बहुत ही ज्यादा चिंता का विषय बन गया है कि तकनीकी ने इतनी सुविधा प्रदान कर रखी है, कि वह अपने मामूली छोटे-मोटे कार्यों के लिये भी उस पर निर्भर हो गया है। युवाओं में फुर्तीला बलशाली, हर कार्यों में आगे, ज्ञान अर्जित करने वाला होना चाहिए। युवा की आज के युग की वो शक्ति है जिस पर पूरे की विश्व प्रगति निर्भर होती है। आज की पीढ़ी सोशल मीडिया के अन्य प्लेटफार्म जैसे फेसबुक इंस्टाग्राम, वॉटसाप आदि में इतना व्यस्त हो गये है कि उन्हें न तो अपनी चिंता होती है और न ही अपने भविष्य की। बस वह इन्हीं प्लेटफॉर्म में अपना समय नष्ट करती जा रहा है। अब युवाओं का भविष्य इन्हीं सोशल मीडिया प्लेटफार्म के कारण गुम होता दिखाई दे रहा है। युवाओं के पास अभी भी समय है, युवाओं को अपने भविष्य की प्रति जागरूक होकर देश की प्रगति के कार्यों में लग जाना चाहिए। अपना भविष्य सवांरना चाहिए। सोशल मीडिया बस दिखावा है यह युवाओं की भ्रमित कर उसका समय व्यर्थ करता जा रहा है। युवाओं की सोशल मीडिया की जाल में न फँसकर अपना समय नई-नई चीजो को सीखने में, नई-नई जानकारी एकत्रित करने में अपना आत्म ध्यान बढ़ाने में लगाना चाहिए। यहा कार्य उन्हें भविष्य में बहुत ही लाभ प्रदान करेगा। तकनीकी का विकास बहुत ही अच्छा विज्ञान की देन है इसका उपयोग सीमित कार्यी के लिए करना चाहिए। हर छोटे-मोटे कार्य जिसे मानवीय रूप से बड़े ही आसानी से सरलता पूर्वक किया जा सकता है उसमें तकनीकी का उपयोग न कर स्वंय उस कार्य को कर लेना चाहिए। इससे किसी भी कार्य को करने में बहुत ही आनंद प्राप्त होगा, एकाग्रता बढ़ेगी। युवाओं का भविष्य आज के दौर में गुम होता दिख रहा है। युवाओं को अपने भविष्य की प्रति जागरूक होकर दृढ़ निश्चयता के साथ अपना भविष्य निर्धारित कर एक नया इतिहास रचना होगा।

जागो युवा जागो गुम न होने दो
अपना भविष्य ।
''कर लो मन में दृढ़ निश्चय,
बदल दो अपने भविष्य की तस्वीर''।

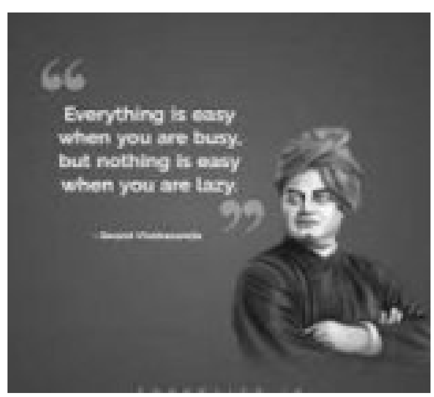

ठहराव की तलाश"

निखिल देशलहरा

अतिथि व्याख्याता

(एम.एस.डब्लू.)

नाम था निशांत। सपना था डीएसपी (DSP) बनना - वर्दी पहनकर समाज की सेवा करना, आँखों में तेज़ और सीने में गर्व लेकर देश के लिए कुछ कर दिखाना। लेकिन किस्मत के पन्नों में कुछ और ही लिखा था। एक नहीं, कई बार कोशिश की। मेहनत की, राते जागीं, किताबों से दोस्ती की। पर सफलता हर बार एक कदम दूर रह गई। जब आखिरी बार नतीजा आया और नाम लिस्ट में नहीं था- अर्जुन की आँखें नहीं मरी, लेकिन उसका मन भर गया। पर वो रूका नहीं।

शुरू हुआ सफर - एक रोजगार से दूसरे रोजगार तक। पहला मुकाम टेलीकॉम इंजीनियर। केबल, नेटवर्क, रिपोर्ट और नीरस दिनचर्या। काम अच्छा था, पर मन नहीं जुड़ा।

फिर आया दूसरा पड़ाव - कॉपोरेट बैंक ऑफिसर। टाई बांधकर स्लाइड बनाकर, मीटिंग्स में मुस्कुराकर दिन निकलते। पैसे थे, प्रतिष्ठा थी- पर आत्मा खामोश थी।

तीसरा मोड़- कोचिंग टीचर बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगा, लेकिन यहाँ भी नंबर, रिजल्ट और दबाव की रेस ने थका दिया।

हर शाम खुद को सवाल करता - "क्या मैं सिर्फ नौकरी कर रहा हूँ" या ज़िदगी भी जी रहा हूँ?'' हर रात बेचैनी में गुरजती - "कहीं मंज़िल मुझसे छूट तो नहीं गई?"

फिर एक दिन एक छोटा सा मौका मिला - एक सोशल वर्क कॉलेज में गेस्ट लेक्चर के लिए बुलाया गया। जैसे ही क्लास में कदम रखा, आँखों में चमक दिखी, सवालों में सच्चाई दिखी और संवाद में जीवन की दिशा।

उस दिन निशांत को महसूस हुआ- "शायद मैं जिस सेवा की तलाश में था, वो वर्दी से नहीं, ज्ञान से हो सकती है।" धीरे-धीरे उसने वहाँ पढ़ाना शुरू किया। हर दिन बच्चों को समझाना, उनके को दिशा देना और अपने संघर्षो की कहानियों बाँटना - यही उसका असली सुख बन गया।

आज निशांत एक सोशल वर्क कॉलेज का शिक्षक है। न कोई टारगेट है, न प्रोमोशन की होड़। बस दिल से काम करने की शांति है।

सपना भले पूरा न हुआ हो, पर सफर ने उसे एक नई पहचान दे दी- संघर्षो से निखरा हुआ, स्थायित्व से भरा हुआ। "कभी-कभी मंज़िल वही होती है, जहाँ हम थक कर नहीं, समझ कर रूकते हैं।"

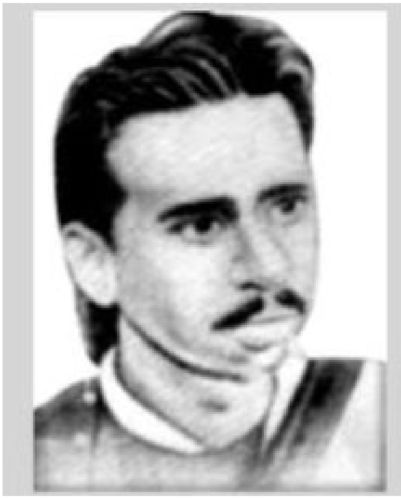

छत्तीसगढ़ के साहित्यकार संक्षिप्त विवरण

छत्तीसगढ़ के साहित्यकार संक्षिप्त विवरण -

पं. सुन्दरलाल शर्मा ने सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ी में प्रबन्ध काव्य लिखने की परम्परा विकसित की।

छत्तीसगढ़ी में गद्य लेखन की परम्परा का शुभारम्भ पं. लोचन प्रसाद पांडेय ने किया।

प्रथम छत्तीसगढ़ी उपन्यास हीरु के कहिनी तथा मोंगरा को मानी जाती है। इसके रचयिता क्रमशः वंशीधर पांडेय तथा शिवशंकर शुक्ल हैं।

प्रथम छत्तीसगढ़ी कहानी सुरही गइया है, इसके कहानीकार पं. सीताराम मिश्र हैं।

प्रथम छत्तीसगढ़ी प्रबन्ध कव्य ग्रन्थ छत्तीसगढ़ दानलीला है, इसके रचनाकार सुन्दरलाल शर्मा हैं।

प्रथम छत्तीसगढ़ी व्याकरण सन् 1880 में काव्योपाध्याय हीरालाल ने सृजनित की थी।

छत्तीसगढ़ी में नाटक की शुरुआत पं. लोचन प्रसाद पांडेय के कलिकाल से मानी जाती है।

छत्तीसगढ़ी में व्यंगय लेखन का प्रारम्भ शरद कोठारी की रचनाओं से माना जाता है।

छत्तीसगढ़ी की प्रथम समीक्षात्मक रचना डॉ. विनय कुमार पाठक की छत्तीसगढ़ी साहित्य अऊ साहित्यकार है।

रतनपुर के गोपाल मिश्र हिन्दी काव्य परम्परा की दृष्टि से छत्तीसगढ़ के वाल्मिकी हैं।

छत्तीसगढ़ी साहित्य

गाथा युग - सन् 1000 से1500 ई. तक

भक्ति युग - मध्य काल सन् 1500 से/1900 ई. तक

आधुनिक युग - सन् 1900 से आज तक

ये विभाजन साहित्यिक प्रवृत्तियों के अनुसार किया गया है यद्यपि प्यारेलाल गुप्त जी का कहना ठीक है कि ''साहित्य का प्रवाह अखण्डित और अव्याहत होता है।''

श्री प्यारेलाल गुप्त जी ने बड़े सुन्दर अन्दाज़ से आगे कहते है - ''तथापि विशिष्ट युग की प्रवृत्तियाँ साहित्य के वक्ष पर अपने चरण-चिह्म भी छोड़ती हैः प्रवृत्यानुरुप नामकरण को देखकर यह नहीं सोचना चाहिए कि किसी युग में किसी विशिष्ट प्रवृत्तियों से युक्त साहित्य की रचना ही की जाती थी। तथा अन्य प्रकार की रचनाओं की उस युग में एकान्त अभाव था।''

2024-25

आदि काल : गाथायुग (सन् 1000 से 1500 ई. तक)

इतिहास की दृष्टि से छत्तीसगढ़ी का गाथायुग को स्वर्ण युग कहा जाता है। गाथायुग के सामाजिक स्थिति तथा राजनीतिक स्थिति दोनों ही आदर्श मानी जा सकती है।

छत्तीसगढ़ बौद्ध-धर्म का एक महान केन्द्र माना जाता था। इसीलिये गाथा युग के पहले यहाँ पाली भाषा का प्रचार हुआ था।

गाथायुग में अनेक गाथाओं की रचना हुई छत्तीसगढ़ी भाषा में। ये गाथायें प्रेम प्रधान तथा वीरता प्रधान गाथायें है। ये गाथायें मौखिक रुप से चली आ रही है। उनकी लिपिबद्ध परम्परा नहीं थी।

गाथायुग के धार्मिक एवं पौरानिक गाथाएँ - गाथायुग के धार्मिक एवं पौरानिक गाथाओं में प्रमुख है फुलवासनठ और पंडवानीठ ।

भक्ति/युग - मध्य काल (सन् 1500 से1900 ई. तक)

छत्तीसगढ़ में इस मध्य काल मे राजनीतिक बदलाओं घटने के कारण शान्ति का वातावरण नहीं रहा। इस मध्यकाल मे बाहर से राजाओं ने छत्तीसगढ़ पर आक्रमण की थी। सन् 1536 में सम्भवत रतन-पुर के राजा बाहरेन्द्र के काल में मुसलमान राजाओं का आक्रमण हुआ था। इस युद्ध में राजा बाहरेन्द्र की जीत हुई थी। पर इस आक्रमण के कारण एक डर बहुत सालों तक बना रहा। और इसीलिये इस काल में जो गाथा रची गई थी, उसमें वीरता की भाव संचित है। इसके अलावा इस युग में और एक धारा धार्मिक और सामाजिक गीतों की है। ये रही दूसरी धारा और तीसरी धारा में हम पाते है स्फुट रचनाओं जिसमें अपने भावनाएँ संचित है।

मध्ययुग/की वीर गाथाएँ

इस युग में जो गाथाएँ प्रमुख है, वे है फूँलकुवंर की गाथा, कल्यानसाय की गाथा इसके अलावा है 'गोपाल्ला गीत', 'रायसिंध के पँवारा', 'देवी गाथा', 'ढोलामारु', 'नगेसर कइना' जो लधु गाथाएँ है। इन्हीं गाथाओं के समान है

'लोरिक चंदनी' 'सरवन गीत' 'बोघरु गीत'

छत्तीसगढ़ के मध्ययुग का तीसरा स्वर है स्फुट रचनाओं का। इस युग में अनेक कवियों में कुछ नाम बड़े ही उल्लेखनीय है

गोपाल कवि,,माखन कवि, रेवा राम, प्रह्मलाद दूबे गोपाल कवि और उनका पुत्र माखन कवि, दोनों रतनपुर के निवासी थे। रतनपुर राज्य में उस वक्त कलचुरि राजा राजसिंह राज्य कर रहे थे। गोपाल कवि के कई रचनायें है। उनमें से कुछ रचनाओं का उल्लेख किया जाता है जैसे - जैमिनी अश्वमेघ, सुदामा चरित, भक्ति चिन्तामणि, छन्द विलास

गोपाल कवि ने छत्तीसगढ़ी में पद्य नहीं रची फिर भी उनकी काव्य रचनाओं में छत्तीसगढ़ी का प्रभाव है। बाबु रेवाराम ने कई सारे काव्य ग्रन्थों की रचना की है। लक्ष्मण कवि का नाम का उल्लेख उनकी भोंसला वंश प्रशस्ति के संदर्भ में किया जाता है। इस काव्य में अंग्रेजो के अत्याचार के बारे में विस्तृत विवरण पाई जाती है।

प्रह्मलाद दूवे जी, सारंगढ़ के निवासी थे। उनकी काव्य 'जय चन्द्रिका' छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक सौन्दर्यता का दर्शाया है।

आधुनिक युग (1900 ई. से अब तक)

छत्तीसगढ़ भाषा साहित्य का आधुनिक युग 1900 ई. से शुरु होता है। इस युग में साहित्य की अलग-अलग विधाओं का विकास बहुत ही अच्छी तरह से हुआ है।

छत्तीसगढ़ी साहित्य के कुछ प्रमुख पुरखे -

पं. सुन्दरलाल शर्मा - पं. सुन्दरलाल शर्मा जो स्वाधीनता संग्रामी थे, वे उच्च कोटी के कवि भी थे।

शर्माजी ठेठ छत्तीसगाढ़ी में काव्य सृजन की थी। पं. सुन्दरलाल शर्मा को महाकवि कहा जाता है।

किशोरावस्था से ही सुन्दरलाल शर्मा जी लिखा करते थे। उन्हें छत्तीसगढ़ी और हिन्दी के अलावा संस्कृत, मराठी, बगंला, उड़िया एवं अंग्रेजी आती थी। हिन्दी और छत्तीसगढ़ी में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने 21 ग्रन्थों की रचना की। उनकी लिखी 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' आज क्लासिक के रुप में स्वीकृत है।

पं. सुन्दरलाल शर्मा की प्रकाशित कृतियाँ - 1. छत्तीसगढ़ी दानलीला 2. काव्यामृतवर्षिणा 3. राजीव प्रेम-पियूष 4. सीता परिणय, 5. पार्वती परिणय, 6. प्रल्हाद चरित्र, 7. ध्रुव आख्यान, 8. करुणा पच्चीसी,9. श्रीकृष्ण जन्म आख्यान, 10. सच्चा सरदार, 11. विक्रम शशिकला,12. विक्टोरिया वियोग, 13. श्री रघुनाथ गुण कीर्तन, 14. प्रताप पदावली, 15. सतनामी भजनमाला, 16. कंस वध।

पं. बंशीधर शर्मा - पं. बंशीधर शर्मा जी का जन्म सन् 1892 ई. में हुआ था। छत्तीसगढ़ी भाषा के पहले उपन्यासकार के रुप में जाने जाते हैं। उस उपन्यास का नाम है 'हीरु की कहिनी' जो छत्तीसगढ़ी भाषा में पहला उपन्यास था।

बंशीधर पांडे जी साहित्यकार पं. मुकुटधर पाण्डेजी के बड़े भाई और पं. लोचन प्रसाद पाण्डेजी के छोटे बाई थे। उनका लिखा हुआ हिन्दी नाटक का नाम है 'विश्वास का फल' एवं उड़िया में लिखी गई गद्य काव्य का नाम है 'गजेन्द्र मोक्ष'

कवि गिरिवरदास वैष्णव - कवि गिरिवरदास वैष्णव जी का जन्म -1897 में रायपुर जिला के बलौदाबाजार तहसील के गांव मांचाभाठ में हुआ था। उनके पिता हिन्दी के कवि रहे हैं, और बड़े भाई प्रेमदास वैष्णव भी नियमित रुप से लिखते थे।

गिरिवरदास वैष्णव जी सामाजिक क्रांतिकारी कवि थे। अंग्रेजों के शासन के खिलाफ लिखते थे -

अंगरेजवन मन हमला ठग के
हमर देस मा राज करया
हम कइसे नालायक बेटा
उंखरे आ मान करया।

उनकी प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ी कविता संग्रह 'छत्तीसगढ़ी सुनाज' के नाम से प्रकाशित हुई थी। उनकी कविताओं में समाज के झलकियाँ मिलती है। समाज के अंधविश्वास, जातिगत ऊँत-नीच, छुआछूत, सामंत प्रथा इत्यादि के विरोध में लिखते थे।

पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र - पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी जी का जन्म सन् 1908 में बिलासपुर में हुआ था। शुरु से ही उन्हें छत्तीसगढ़ के लोक परंपराओं और लोकगीतों में रुचि थी। शुरु में ब्रजभाषा और खड़ी बोली में रचना करते थे। बाद में छत्तीसगढ़ी में लिखना शुरु किये।

उनकी प्रकाशित पुस्तके हैं - 1. कुछू कांही, 2. राम अउ केंवट संग्रह, 3. कांग्रेस विजय आल्हा, 4. शिव-स्तुति, 5. गाँधी गीत,6. फागुन गीत,7. डबकत गीत, 8. सुराज गीता, 9. क्रांति प्रवेश, 10. पंचवर्षीय योजना गीत, 11. गोस्वामी तुलसीदास (जीवनी), 12. महाकवि कालिदास कीर्ति, 13. छत्तीसगढ़ी साहित्य को डॉ. विनय पाठक की देन।

स्व. प्यारेलाल गुप्त - साहित्यकार एवं इतिहासविद् श्री प्यारेलाल गुप्तजी का जन्म सन् 1948 में रतनपुर में हुआ था। गुप्तजी आधुनिक साहित्यकारों के 'भीष्म पितामाह' कहे जाते हैं। उनके जैसे इतिहासविद् बहुत कम हुए हैं। उनकी 'प्राचीन छत्तीसगढ़' इसकी साक्षी है।

साहित्यिक कृतियाँ - 1. प्राचीन छत्तीसगढ़, 2. बिलासपुर वैभव, 3. एक दिन, 4. रतीराम का भाग्य/सुधार, 5. पुष्पहार, 6. लवंगलता, 7. फ्रान्स राज्यक्रान्ति के इतिहास, 8. ग्रीस का इतिहास, 9. पं. लोचन प्रसाद पाण्डे ।

2024-25

गुप्त जी अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी तीनों भाषाओं में बड़े माहिर थे। गांव से उनका बेहद प्रेम था।

कोदूराम दलित - कोदूराम दलित का जन्म सन् 1910 में जिला दुर्ग के टिकरी गांव में हुआ था।

गांधीवादी कोदूराम प्राइमरी स्कूल के मास्टर थे उनकी रचनायें करीब ८०० (आठ सौ) है पर ज्यादातर अप्रकाशित हैं। कवि सम्मेलन में कोदूराम जी अपनी हास्य व्यंग्य रचनाएँ सुनाकर सबको बेहद हँसाते थे। उनकी रचनाओं में छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियों का प्रयोग बड़े स्वाभाविक और सुन्दर तरीके से हुआ करता था। उनकी रचनायें - 1. सियानी गोठ, 2. कनवा समधी, 3. अलहन, 4. दू मितान, 5. हमर देस, 6. कृष्ण जन्म, 7. बाल निबंध, 8. कथा कहानी, 9. छत्तीसगढ़ी शब्द भंडार अउ लोकोक्ति।

हरि ठाकुर - हरि ठाकुर का जन्म - 1926 में रायपुर में हुआ था। उनकी मृत्यु सन् 2001 में हुई। वे रायपुरवासी थे। न सिर्फ साहित्यकार, गीतगार थे हरि ठाकुर बल्कि छत्तीसगढ़ राज्य के आन्दोलन में डॉ. खूबचन्द बघेल के साथ थे। स्वाधीनता संग्रामी ठाकुर प्यारेलाल सिंह के पुत्र होने के नाते हरिसिंह की परवरिस राजनीतिक संस्कार में हुई थी। छात्रावास में वे छात्रसंघ के अध्यक्ष रह चुके थे। उन्होंने बी.ए.एल.एल.बी. की थी। वे हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी, दोनों भाषाओं में लिखते थे।

उनके हिन्दी काव्य - 1) नये स्वर, 2) लोहे का नगर, 3) अंधेरे के खिलाफ, 4) मुक्ति गीत, 5) पौरुष :नए संदर्भ, 6) नए विश्वास के बादल

छत्तीसगढ़ी काव्य - 1) छत्तीसगढ़ी गीत अउ कविता, 2) जय छत्तीसगढ़, 3) सुरता के चंदन, 4) शहीद वीर नारायन सिंह, 5) धान क कटोरा, 6) बानी हे अनमोल, 7) छत्तीसगढ़ी के इतिहास पुरुष, 8) छत्तीसगढ़ गाथा।

बद्रीविशाल परमानंद - बद्रीविशाल परमानंद छत्तीसगढ़ के जाने माने लोक कवि हैं जिनके बारे में हरि ठाकुरजी लिखते हैं -

''परमानन्द जी छत्तीसगढ़ के माटी के कवि हैं। छत्तीसगढ़ के माटी ले ओखर भाषा बनथे, ओखर शब्द अउ बिम्ब लोकरंग अउ लोकरस से सनाये हे। ओखर रचना हा गांव लकठा में बोहावत शांत नदिया के समान हे जउन अपने में मस्त हे।''

उनका जन्म गांव छतौना में 1917 में हुआ था। रायपुर में उनकी बनाई हुई भजन मंडली 'परमानंद भजन मंडली' के नाम से जाने जाते हैं और करीब 70 भजन मण्डली अभी भी चल रहे हैं। 1942 में आजादी की गीत गागाकर भजन मण्डली, लोगों में नई जोश पैदा करता था।

कपिलनाथ कश्यप - कपिलनाथ कश्यप का जन्म -1906 में बिलासपुर जिले के ग्रामीण अंचल में हुआ था, कपिलनाथजी रामचरितमानस का छत्तीसगढ़ी भाषा में अनुवाद किया। उनकी छत्तीसगढ़ी और हिन्दी भाषा में कई रचनाएं हैं -

1) रामकथा, 2) अब तो जागौ रे, 3) डहर के कांटा, 4) श्री कृष्ण कथा, 5) सीता के अग्नि परीक्षा, 6) डहर के फूल, 7) अंधियारी रात, 8) गजरा, 9) नवा बिहाव, 10) न्याय, 11) वैदेही-विछोह।

डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा - डॉ नरेन्द्र देव वर्मा का जन्म सन् 1939 एवं मत्यु सन् 1979 में हुई।

उन्होंने 'छत्तीसगढ़ी स्वप्नों और रुपों का उदविकास' पर अपनी पी. एच. डी. की थिसीस लिखी। वे छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी, दोनों में लिखते रहे। उनकी किताब 'छत्तीसगढ़ी भाषा का उदविकास' छत्तीसगढ़ी साहित्य को जानने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

उनकी छत्तीसगढ़ी गीत के संग्रह का नाम है 'अपूर्वा', उनका उपन्यास 'सुबह की तलाश' बहुत ही

भावनापूर्ण लेखन है।

उनकी अनुदित है मोंगरा, श्री मां की वाणी, श्री कृष्ण की वाणी, श्री राम की वाणी, बुद्ध की वाणी, ईसा मसीह की वाणी, मुहम्मद पैंगबर की वाणी। वे यथार्थ में सेक्युलर थे।

हेमनाथ यदु - हेमनाथ यदुजी का जन्म - 1924 में रायपुर में हुआ था। छत्तीसगढ़ी बोलचाल की भाषा में वे रचनायें लिखकर गये। उनकी रचनायें तीन भागों में है - 1) छत्तीसगढ़ के पुरातन इतिहास से सम्बंधित, 23) लोक संस्कृति से संबंधित साहित्य, 3) भक्ति रस के साहित्य - छत्तीसगढ़ दरसन ।

भगवती सेन - भगवती सेन का जन्म - 1930 में धमतरी के देमार गांव में हुआ था । उनकी कवितायें किसान, मजदूर और उपेक्षित लोगों के बारे में है। प्रगतिशील कवि थे। छत्तीसगढ़ी कविताओं का संकलन दो पुस्तकों में की गई है। पहला है - 'नदिया मरै पियास' और दुसरा है - 'देख रे आंखी , सुन रे कान'

लाला जगदलपुरी - लाला जगदलपुरी जी का जन्म -1923 में बस्तर में हुआ था, बस्तर से उनका अगाध प्रेम है। लेखन के साथ-साथ जगदलपुरी जी अध्यापन तथा खेती का काम करते है। लाला जगदलपुरी जी के प्रेरणा से बस्तर में कई साहित्यकार पनपे। उनकी 'हल्बी लोक कथाएँ' के कई संस्करण प्रकाशित हो गये हैं। डॉ. सत्यभामा आडिल अपनी पुस्तक 'छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य' (पृ.-144) में लिखती है - 'आप अपनी छत्तीसगढ़ी कविताओं में नायिकाओं का कलात्मक

एवं सुरुचिपूर्ण चित्रण करने के लिए प्रसिद्ध है।' हल्बी साहित्य में इनका योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। हल्बी में जो दूसरे साहित्यकार है उन सबके नाम है भागीरथी महानंदी, योगेनद्र देवांगन, हरिहर वैष्णव, जोगेनद्र महापात्र, रुद्रनारायन पाणिग्रही, सुभाष पान्डेय, रामसिंह ठाकुर।

नारायणलाल परमार - नारायणलाल परमार का जन्म - 1927 में गुजरात में हुआ था। छत्तीसगढ़ में वे आये एवं यहीं वे साहित्य सृजन करने लगे। हिन्दी और छत्तीसगढ़ी में उनकी रचनायें हैं - उपन्यास - प्यार की लाज, छलना, पुजामयी काव्य संग्रह - काँवर भर धूप, रोशनी का घोषणा

पत्र, खोखले शब्दों के खिलाफ, सब कुछ निस्पन्द है, कस्तूरी यादें, विस्मय का वृन्दावन ।

छत्तीसगढ़ी साहित्य - सोन के माली, सुरुज नई मरे, मतवार अउ, दूसर एकांकी ।

डॉ. पालेश्वर शर्मा - डॉ. पालेश्वर शर्मा का जन्म - 1928 में जांजगीर में हुआ था। वे महाविद्यालय में अध्यापक थे। छत्तीसगढ़ी गद्य और पद्य दोनों में उनका समान अधिकार है। उन्होंने 'छत्तीसगढ़ के कृषक जीवन की शब्दावली' पर पी.एच.डी. की।

प्रकाशित कृतियाँ - 1. प्रबंध पाटल 2. सुसक मन कुररी सुरताले 3. तिरिया जनम झनि देय (छत्तीसगढ़ी कहानियाँ) 4. छत्तीसगढ़ का इतिहास एवं परंपरा 5. नमस्तेऽस्तु महामाये 6. छत्तीसगढ़ के तीज त्योहार, 7. सुरुज साखी है (छत्तीसगढ़ी कथाएँ) 8. छत्तीसगढ़ परिदर्शन, 9. सासों की दस्तक - इसके अलावा पचास निबंध और 100 कहानियाँ।

केयूर भूषण - केयूर भूषण का जन्म 1928 में दुर्ग जिले में हुआ था। उन्होंने 11 साल की उम्र से ही आज़ादी की लड़ाई में भाग लेना शुरु कर दिया। सिर्फ 14 साल के थे जब 1942 के आन्दोलन में भाग लेकर नौ महीने के लिये जेल में रहे थे। बाद में किसान मजदूर आन्दोलन में जुड़कर जेल गये थे।

केयूर भूषण जी गांधीवादी चिंतक रहे है। हरिजन सेवक संघ के पदाधिकारी रह चुके हैं। रायपुर लोकसभा से दो बार सासंद चुने गए। वे लखन कार्य में व्यस्त रहते थे , समाज की उन्नति के लिए लगातार काम किया। उनकी रचनायें हैं - लहर (कविता संकलन) कुल के मरजाद (छत्तीसगढ़ी उपन्यास) कहाँ बिलोगे मोर धान के कटोरा (छत्तीसगढ़ी उपन्यास) कालू भगत (छत्तीसढ़ी कथा संकलन) छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता सेनानियाँ।

केयूर भूषण जी छत्तीसगढ़ी अउ छत्तीसगढ़ संदेश साप्ताहिक सम्पादन करते थे । छत्तीसगढ़ी साहित्य के बारे में उनका कहना था कि - 'छत्तीसगढ़ी साहित्य अब पोठ होवत हे। सबे किसम के छत्तीसगढ़ी

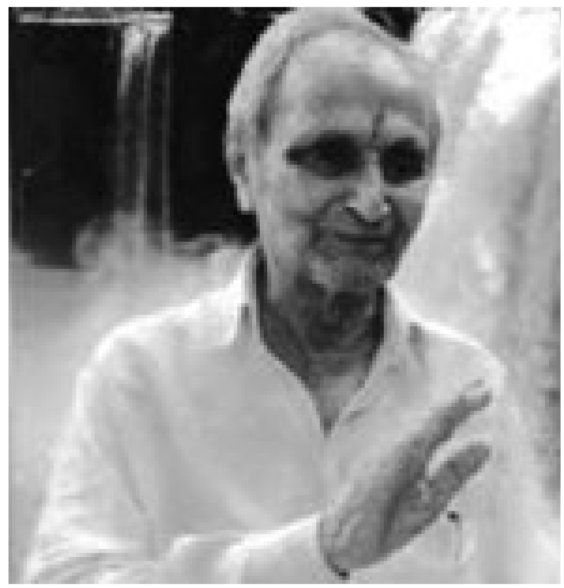

साहित्य उजागर होवत हे। जतेक छत्तीसगढ़ी शब्द वोमा काम आही ओतके छत्तीसगढ़ी भाव सुन्दराही। जब छत्तीसगढ़ी मा हिन्दी शब्द सांझर-मिझंर होय लागथे तो ओखर मिठास मा फरक आये लागथे। जिंहा तक हो सकय मिलावट ले बांचय अउ खोजके छत्तीसगढ़ी शब्द ला अपन लेखन मा शामिल करय।

000

शताब्दी स्मरण

2024-25 साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती वर्ष है । उन्हें स्मरण करना का अर्थ अपनी परम्परा के सूत्रों से जुड़ना और यह भी याद रखना है कि वे न होते तो हमारा जीवन ठीक नहीं होता, जैसा कि वह है ।

हमारे सांस्कृतिक जीवन में उनका हस्तक्षेप गहरे मायने रखता है ।इसलिए हम उन्हें स्मरण करते हैं ।

मोहन राकेश

(8 जनवरी 1925-3 दिसंबर1972)

मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 को पंजाब के अमृतसर में हुआ था। हिन्दी साहित्य के एक प्रमख हस्ताक्षर कहे जाने वाले मोहन राकेश का असली नाम मदन मोहन गुगलानी था । उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. किया था। वे हिंदी साहित्य के 'नई कहानी' साहित्यिक आंदोलन के अग्रदूतों में से एक थे। उन्होनें कुछ अरसे तक अध्यापन एवं प्रमुख पत्रिका सारिका का संपादन भी किया। उन्होंने हिन्दी साहित्य की कई विधाओं में रचना की, जिनमें कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, यात्रा वृतांत, और डायरी जैसी विधाएं शामिल हैं। मोहन राकेश के नाटक आषाढ़ का एक दिन (1958) ने हिन्दी नाटकों को एक नई दिशा दी। इसे हिन्दी का पहला आधुनिक हिंदी नाटक भी कहा जाता है, जिसे संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता में पुरस्कृत किया गया। उनके नाटकों ने रंगमंच का आस्वाद, तेवर, और स्तर बदल दिया। हिंदी नाटकों में भारतेंदु और प्रसाद के बाद का युग मोहन राकेश युग रहा ।

मोहन राकेश की प/मुख रचनाएं - नाटकः आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे, पैर तले की जमीन (अधूरा जिसे कमलेश्वर ने पूरा किया), सिपाही की मां, प्यालियां टूटती हैं, रात बीतने तक, छतरियां, शायद, हंः। उपन्यासः अंधेरे बंद कमरे, अंतराल, न आने वाला कल । कहानी संग्रहः क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, पहचान तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ। निबंध संग्रहः परिवेश । अनुवादः मृच्छकटिकम, शाकुंतलम। यात्रा वृतांतः आखिरी चट्टान तक उपन्यास। मोहन राकेश की डायरी हिन्दी में इस विधा की सबसे सुंदर कृतियों में से एक मानी जाती है।वे संगीत नाटक अकादमी से सम्मानित हुए।

ऋत्विक घटक

(4 नवंबर 1925- 6फरवरी 1976)

ऋत्विक घटक का जन्म 4 नवंबर, 1925 को तत्कालीन पूर्वी बंगाल के ढाका में हुआ। बाद में उनका परिवार कोलकाता आ गया। यही वह काल था जब कोलकाता शरणार्थियों का शरणस्थली बना हुआ था। इस दौर के विस्थापन ने ऋत्विक घटक के जीवन को काफी प्रभावित किया। यही कारण है कि सांस्कृतिक विच्छेदन और निर्वासन उनकी फिल्मों में बखूबी दिखता है।वे 1951 में इंडियन पीपल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) के साथ जुड गए। वे फ़िल्म निर्माता-निर्देशक, नाट्य निर्देशक के साथ ही कहानीकार और पटकथा लेखक थे। उन्होंने प्रसिद्ध लेखक बेर्टेल्ट ब्रेख्त और गोगोल को बंगला में अनुवाद भी किया । उनकी कहानियों की पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं और उनका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ। ऋत्विक घटक ने अपना पहला नाटक कालो सायार (द डार्क लेक) 1948 में लिखा । उन्होंने अपना अंतिम नाटक ज्वाला (द बर्निंग) 1957 में लिखा और निर्देशित किया। निमाई घोष के चिन्नामूल (1950) में बतौर अभिनेता और सहायक निर्देशक के रूप में ऋत्विक घटक ने फिल्मी दुनिया में प्रवेश किया। 1952 में उनकी पहली पूर्ण फिल्म नागरिक आई। हिन्दी फिल्म मधुमती पटकथा लेखक के रूप में ऋत्विक घटक की सबसे बडी व्यावसायिक सफलता थी। जिसकी कहानी के लिए फ़िल्म फेयर पुरस्कार के लिए नामांकित हुए। ऋत्विक घटक ने क-रीब आठ फ़िल्मों का निर्देशन किया।भारतीय फ़िल्म निर्देशकों के बीच ऋत्विक घटक का उत्कृष्ट निर्देशकों में विशेष स्थान माना जाता है। ऋत्विक घटक ऐसे फ़िल्मकार हुए थे जिन्होंने कला के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व काम किया। उन्होंने हमेशा साहित्यिक प्रधानता पर जोर दिया। उनकी प्रसिद्ध फ़िल्में, मेघे ढाका तारा (1960), कोमल गंधार (1961) और सुबर्णरिखा (1962)थीं। 1966 में ऋत्विक घटक पुणे चले गए जहां वे भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान में अध्यापन करने लगे । 1970 के दशक में ऋत्विक घटक फ़िल्म निर्माण में फिर वापस लौटे। उनकी आख़िरी फ़िल्म आत्मकथात्मक थी जिसका नाम था जुक्ति तोक्को आर गोप्पो (1974) थी। उन्हें फिल्म के राष्ट्रीय पुरुस्कार के साथ ही पद्मश्री सम्मान से भी नवाजा गया।

गुरुदत्त

(9 जुलाई 1925-10 अक्तूबर 1964)

गुरुदत्त का जन्म 9 जुलाई 1925 को बैंगलोर में हुआ था। उनका वास्तविक नाम 'वसंथ कुमार शिवशंकर पादुकोण' था। उनकी साहित्यिक रुचि और संगीत की समझ की झलक हमें उनकी सभी फ़िल्मों में दिखती है। वे एक अच्छे नर्तक भी थे। गुरुदत्त ने अल्मोड़ा स्थित उदय शंकर की नृत्य अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उन्होंने कुछ समय कलकत्ता में टेलीफ़ोन ऑपरेटर का काम भी किया। इसके बाद वह पुणे चले गए और प्रभात स्टूडियो से जुड़ गए, जहाँ उन्होंने अपने फ़िल्मी जीवन का आगाज़ नृत्य-निर्देशक के रूप में किया। अभिनय कभी उनकी पहली पसंद नहीं रही, मगर उनके सरल, संवेदनशील और नैसर्गिक अभिनय का लोहा सभी मानते थे।

वे एक रचनात्मक लेखक भी थे और उन्होंने शुरुवात में कहानियां भी लिखी जो इलेस्ट्रेटेड वीकली ऑफ़ इंडिया और कुछ अन्य पत्रकिाओं में प्रकाशित भी हुई थीं। निर्देशक के रूप में उनकी पहली प/मुख फीचर फ़िल्म देवानंद के नवकेतन फ़िल्म्स के बैनर तले बनी बाज़ी (1951) थी। इसके बाद गुरुदत्त ने अपनी प्रोडक्शन कंपनी शुरू की। उन्होंने अपने संक्षिप्त, किंतु प्रतिभा संपन्न पेशेवर जीवन में फिल्मों की कई शैलियों में प्रयोग किया, प्रकाश और छाया के कल्पनाशील उपयोग, भावपूर्ण दृश्यबिंब, कथा में कई विषय-वस्तुओं की परतें गूंथने की अद्भुत क्षमता और गीतों के मंत्रमुग्धकारी छायांकन के कारण उन्हें भारतीय सिनेमा के शीर्षस्थ छायाकारों में ला खडा किया।वास्तव में वे विश्व स्तरीय फ़िल्मकार और निर्देशक थे। उनकी प्रमुख फिल्में प्यासा,कांगज के फूल, साहब बीबी और गुलाम, चौदवीं का चांद, मस्टिर एंड मिसेस 55, आर पार, सांझ और सवेरा आदि हैं।

शोभा गुर्टू

8फ़रवरी, 1925-27 सितम्बर, 2004

शोभा गुर्टू का जन्म 8 फ़रवरी, 1925 को कर्नाटक के बेलगाँव ज़िले में हुआ था। वे भारतीय शास्त्रीय शास्त्रीय गायन की एक प्रसिद्ध गायिका थीं। उनका मूल नाम भानुमति शिरोडकर था। वे एक ऐसी शास्त्रीय शिल्पी थीं, जिन्होंने गायन की ठुमरी शैली को विश्व भर में ख्याति दिलाई। शोभा गुर्टू को ठुमरियों की रानी कहा जाता है। उन्होंने ठुमरी के अतिरिक्त कजरी, होरी और दादरा आदि उप-शास्त्रीय शैलियों के अस्तित्व को भी बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

उनकी माताजी मेनेका बाई शिरोडकर स्वयं भी एक नृत्यांगना थीं तथा जयपुर-अतरौली घराने के उस्ताद अल्लादिया ख़ाँ से गायकी सीखती थीं। शोभा गुर्टू को शास्त्रीय संगीत सीखने की प्रेरणा अपनी माँ से ही मिली थी। उन्होंने संगीत की प्राथमिक शिक्षा उस्ताद अल्लादिया ख़ाँ के सुपुत्र उस्ताद भुर्जी ख़ाँ साहब से प्राप्त की। इसके बाद उस्ताद अल्लादिया ख़ाँ के भतीजे उस्ताद नत्थन ख़ाँ से मिली तालीम ने उनके सुरों में जयपुर-अतरौली घराने की नींव को सुदृढ़ किया।

उनकी गायकी को एक नयी दिशा और पहचान मिली उस्ताद घाममन ख़ाँ की छत्रछाया में, जो उनकी माँ को ठुमरी और दादरा व अन्य शास्त्रीय शैलियाँ सिखाने मुंबई में उनके परिवार के साथ रहने आये थे। उनकी हल्की हिंदुस्तानी शास्त्रीय शैली के गाने बहुत लोकप्रिय हैं मगर उन्हें शुद्ध शास्त्रीय शैली पर भी समान अधिकार था।

उन्हें 1987 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें लता मंगेशकर सम्मान,, शाहू महाराज पुरस्कार, महाराष्ट्र गौरव सम्मान के साथ ही 2002 में पद्म भूषण से नवाजा गया।

कृष्णा सोबती

(18 फरवरी 1925-25 जनवरी 2019)

कृष्णा सोबती अपनी बेलाग कथात्मक अभिव्यक्ति और सौष्ठवपूर्ण रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने कथा भाषा को विलक्षण ताज़गी दी। कृष्णा सोबती ने फिक्शन की एक विशिष्ट शैली के रूप में विशेष प्रकार की लंबी कहानियों का सृजन किया जो औपन्यासिक प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

कहानी संग्रह- बादलों के घेरे - 1980, लम्बी कहानियां -डार से बिछड़ी -1958, मित्रो मरजानी -1967, यारों के यार -1968, तिन पहाड़ -1968, ऐ लड़की -1991, जैनी मेहरबान सिंह -2007

उपन्यास-सूरजमुखी अँधेरे के - 1972,जिन्दगीनामा-1979, दिलोदानिश -1993,.समय सरगम - 2000, गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान -2017 (निजी जीवन को स्पर्श करती औपन्यासिक रचना)

संवाद-संस्मरण- हम हशमत (तीन भागों में),सोबती एक सोहबत, शब्दों के आलोक में,सोबती वैद संवाद, मुक्तिबोध : एक व्यक्तित्व सही की तलाश में - 2017, लेखक का जनतंत्र -2018, मार्फत दिल्ली -2018

यात्रा-आख्यान- बुद्ध का कमण्डल, लद्दाख

सम्मान - हिन्दी अकादमी शिलाका सम्मान, /जिन्दगीनामा/ के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार1980, अकादमी का सर्वोच्च सम्मान साहित्य अकादमी का फेलो 1996, ज्ञानपीठ सम्मान/ 2017 ।

Empowering Dignity : The Visionary Work of Bindeshwar Pathak and Sulabh International

Priyam Vaishnava

In the realm of social reform and sanitation, Bindeshwar Pathak stands as a beacon of change, and Sulabh International, the organization he founded, serves as a testament to his unwavering commitment to humanitarian causes. Born on April 2, 1943, in Bihar, India, Bindeshwar Pathak has dedicated his life to eradicating the age-old stigma attached to manual scavenging and uplifting the downtrodden. His pioneering efforts have not only transformed the lives of thousands but have also set a benchmark for social activism and sanitation initiatives.

The Birth of Sulabh International:

Sulabh International, established by Bindeshwar Pathak in 1970, emerged as a response to the dehumanizing practice of manual scavenging prevalent in India. Manual scavenging, involving the manual removal of human waste, was not only an occupation but also a form of social discrimination. Pathak recognized the urgent need to address this issue and envisioned a society where sanitation and human dignity would go hand in hand.

Key Initiatives:

1. Introduction of Two-Pit Toilet Technology:

Bindeshwar Pathak introduced the innovative two-pit toilet technology, a cost-effective and eco-friendly solution to address the sanitation needs of rural and urban areas. This technology not only improved sanitation but also played a pivotal role in mitigating environmental pollution.

2. Liberation of Manual Scavengers:

Sulabh International has been instrumental in rehabilitating manual scavengers, providing them with alternative livelihoods,

vocational training, and education for their children. This initiative aimed not only at freeing individuals from the shackles of this inhumane practice but also at changing societal perceptions.

3. Public Toilets Across India:

The organization has constructed public toilets across the country, making sanitation accessible to the masses. These well-maintained facilities have become a crucial component of the Swachh Bharat Abhiyan (Clean India Campaign), contributing significantly to the government's efforts to promote cleanliness and hygiene.

4. Social and Cultural Impact :

Sulabh International's impact

extends beyond sanitation. Pathak's initiatives have triggered a paradigm shift in societal attitudes towards manual scavengers and sanitation workers. By actively engaging with communities, the organization has fostered awareness and empathy, breaking down centuries-old prejudices.

5. Global Outreach :

Bindeshwar Pathak's vision transcends national boundaries. Sulabh International has been involved in various sanitation and social development projects globally, collaborating with international organizations and governments to share its expertise and foster positive change.

Recognition and Awards:

Bindshwar Pathak's remarkable contributions have not gone unnoticed. He has received numerous award, including the Padma Bhushan, India's third-highest civilian award, in recognition of his exceptional service to society. His work has also been acknowledged by international bodies, further solidifying the global impact of Sulabh International.

Bindeshwar Pathak's Journey, from the narrow lanes of Bihar to the exemplifies the transformative power of one individual's vision and commchange. Sulabh International continues to be a guiding light in the quequitable and sanitary world. Through innovation, compassion, and relent. Bindeshwar Pathak has not only improved sanitation but has also restored who were marginalized and forgotten. In the ongoing pursuit of a clean world, Sulabh International and its founder remain an inspiration for future change makers.

Never Give Up

Kuldeep Tripathi

III - sem. (M.A. English)

Life as we all know is not a smooth road. It is filled with bumps, twists and sometimes seemingly insurmountable mountains. Each of us at some point, has faced moments where we've felt crushed, where everything around us seems to be falling proud and the weight of failure feels unbearable, but it is in these very moments of despair that the true test of our spirit begins.

What makes peel ions truly remarkable in not how many times they succeed but how many times they rise after falling? When life knocks you down, it's easy to want to stay there. To accept defeat. But remember. Defeat is not the works thing in the world. Not trying again its.

Thomas Edison, the man who gave us the electric light build failed over a thousand times before finally succeeding. Can you imagine a giving up after a hundred. Or even a thousand times? But he didn't each failure was not or end for time. But a lesson . He famously said. I have not failed I have just found 10,000 way that won't work".

Each failure brings us one step closer success. It is point of the journey not the end of it. It refines us teacher us and strengthens us for what's to come. The road to success is proved with chilling but it is those very challenges that make the destination worth it. Look at alts years of fringing, discipline and sacrifice all lead up to a few minutes of performance sometime, despite all that hard work, they don't win. But do they give up? No. they go back, trains harder, focus deeper, and come back Stanger.

What separates these who achieve greatness from these who give up is not talent or luck, but persistence relentless, unshakable belie of that giving up is simply not an option.

So, to each of you here today. I say this life will best you, but do not be disluraged. When you're tired when you feel like you've given all that you can push a little harder. pen's focus on how many times you've failed. Focus on how much you've groups because of it. The stringers to keep going lies within each one … and it is only we refuse to give up that we find our true potential.

Remember, the darkest hour in guest before down no matter how hard things get, no matter how impossible the challenge may sym-never give up.

Life is not a problem to be solved But a reality to be experienced.

Shreya Shukla
M.A. III-sem.

: Countless hours, thousands of refusals, and hundreds of failures, this is what took Charles Bukowski to become one of the most successful poets of the contemporary period. His advice to younger generations is engraved on his tomb. It reads, Don't try. The dictum, Don't try, might seem antithetical coming from a man who spent his entire life trying, but his statement has a deeper and more profound realisation behind it. He advised us not to buy for the sake of material pleasure as a means to the solution of the problem of life. He wanted to discover and release the passion within.

Life is not a mathematical formula

We engrain fixities in our life like a quadratic equation, reduce it to some end goal, be it material, social, intellectual, and political success. Rather, life is a reality to be experienced, if possibility, to be explored, To weave a rich tapestry experience, and going to deathbed with no regrets. To have lived a rich and fulfilling life, rather from just a long one.

Our lives are like pictures done in rough mosaic. Any person who has ever achieved something worthwhile did not obsess with the result ever.

Rather his success was the corollarg of exploration of his passion.

Alexander did not think of becoming the world conqueror.It was the living every moment to the fullest. Likewise, life of the great people like Plato, Aristotle, Marcus aurelius, Francis, Yoya, William Shakespeare, etc. stand as a testimony to the fact that reducing the life of the solution of some problem Problem serves no purpose.

Such a life only frustrates us and waves us broken if the goal is not fulfilled. Even if it does, it does not bring peau to our hearts. Follow of the Pedantic approach of life

The miseries that bound us are result of our own creation. We envisage a hypothetical solution of non-existant problem and make our life problem and purpose to reach it make it more chaotic, trampling on everything that comes in

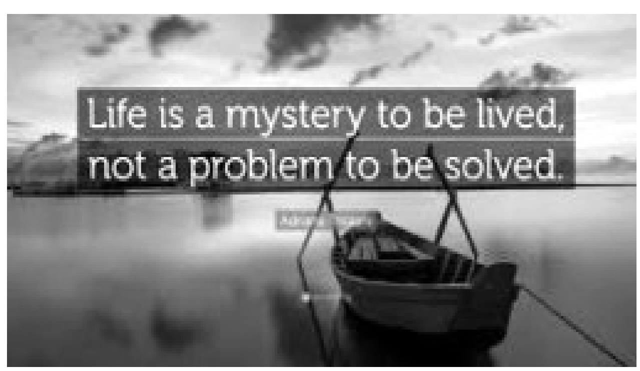

between the invasion of Ukraine as a direct result of goal of world domination of Russia.

According to assessment report of IPCC, even with current emission reduction goal, we will breach the target of 1.5 degree Celsius and level the tallered earth and shattered environment to the coming generation. This is also result of narrow perception of life. Thinking of development as a problem to be solved rather than a possibility to be explored.

Nuclear Posturine, killer weapons and spau wars are also a fallout of our flavored approach to life.

The Art of Experiencing Life

Adi Shankaracharya once asked his guru, Gaudapada, What is the meaning of life? His guru smiled, On the further probing he said with a calm voice- 'There is no meaning of life. Life is not a tool.

A bullock cart has meaning because its goal is to move from one place to another, and they are done with goal, but a person living by leading is a goal for , that one need and has to be composed.

The question about the goal of life of any arises when we are obvious to the

gift that life has to offer.Living this kind of life, a life of experience has the potential to undo all miseries.This was the secret of anuint India. This is the antidote to the malaise that we face today.

Also William Wordsworth aptly quotes -

" The best portion of a good man's life are his little, noneless, unremembered acts of kindness and love." William Shakespeare is in, As you like it...

"All the world's stage and all the men and women merely players. They have their exit and entrances; And one man in his time play many parts. "

By following such an approach to life, we moved above the comastosity and drudgery of life and Served a state of Nirvana It does not matter whether we succeed or fail in life, we become like the Mythical Hers sispyphu from Albert campus' book who is content even in failure because he has put in the effort honestly.Horace, in his poem, also advises us "In the moment of our talking, envious time has ebbed away, Carpe Diem! Zeize the day trust tomorrow as little as you may."

In addition, T. S. Elpots wording states, to do useful things, to contemplate the beautiful things: that is enough for one man's life. ' Moreover, we must head to Charles Bukowski's advice of' Not trying 'to solve the problem of life, but doing the things whole heartedly and experiencing the joy it has to offer.---

And I throw the keypad

Aditi Singh
B.Sc. - V Sem.

As a final year student of graduation, I was advised to carry a keypad instead of a smart phone during my internal exam. However, I chose to disregard this advice and ended up throwing the keypad.

When I come home in the evening, a question often arises in my mind: " Am I addicted?"

This question has prompted me to consider the development of communication in the modern world.

Over the course of hundreds of years the development of communication systems has evolved significantly. This evolution can be observed form methods such as pigeon carriers and horse-riders, to the introduction of post-cards, telegrams, telephones, faxes, emails and the transition form paper-based communication to mobile phones and advancements form 2G to 5G technology.

This vast development not only breaks barriers between different peoples but also connect different parts of the world.

I appreciate the development of the communication sector, but it's equally challenging to determine whether it has contributed positively to our progress or that become a significant issue for our generation. There's no doubt that individuals in my age group spend a considerable amount of time on social media, the internet, and online chat.

I appreciate the development of the communication sector, but it's equally challenging to determine whether it has contributed positively to our progress or has become a significant

issue for our generation. There's no doubt that individuals in may age group spend a considerable amount of time on social media, the internet, and online chat.

We have replaced most of out gadgets like calculators, radios, alarm clocks, etc, with smart phones, which has led to continuous radiation exposure.

The Earth ahs become a radiation hub.

Who has published may reports on this subject?" Exposure to RF radiation from mobile phones causes cancers like glioma and acoustic neuronal, as well as musculoskeletal disorders, hearing liss, eye strain, increased stress levels, etc."

Who estimated that 6.3% of India's population has hearing impairment based on NASSO data?

We estimated that 6.3% of India's population has hearing impairment based on NASSO data?

We say this is the end of our social life because social media connects us with people call over the world but not with our neighbors.

We, the new generation are reacting to the old traditional lifestyle where we feel comfortable waking up at night and sleeping in the morning, but this disrupts our biological clock and leads to various diseases.

Why should we not limit the usefulness or disruption of mobile phones in our lives.

We live a virtual life and we need to get active again.

I know several repressors from the same university who use keypad, maintain a gap between use and overuse, and are successful at it.

May be this is one of the reasons for their success. It's up to us to surrender to technology or the get it. I don't know how long it's been going on for, but the keypad still rings in the morning.

The Silent vendors : A Portrait of Hope

Piyush Kumar Sahu
B.C.A. - Ist Sem.

Beside the road, a humble stall
Nestled under trees so tall
With withered hands and hearts so grand
They offer goods form their own land.

Basket of berries, bright and sweet
Ward, fresh bread - a farmer's treat
Jars of honey, golden and Pure
Each item crafted simple and pure.

But do you see them as you pass
The faces lined like rippling glass?
Their hopes stretched thin, their patience. Wide
While cars just speed on by their side

The vendor smiles though no one stops
Dreams of selling their precious groups
They've worked the earth with sweat & tears
Yet stand unseen through all these years.

Pauses for a moment, breathe in the air

See the love and labor there
A world built on honest ground,
In every fruit and flower found.

To buy is not just an enriching.
It's a bond that time cannot estrange
You take their softy, piece by Piece.
And give them hope, if just a lease.

So nest time as you drive along.
Hear their quiet, persistent song.
Stop and in their humble hand
Find more than goods - find heart, find land

The Bard of BengalS

U Somya Reddy
M.A. English
II Semester

In Bengal's heart, a flame was born,
With quill in hand, his soul was sworn.
To beauty, truth, and boundless skies,
Where thoughts take wing and spirits rise.
A poet first, with verse so deep,
He stirred the hearts that dared to weep.
With songs he wrote the dawn's first light,
And bathed the world in colors bright.

He sang of peace, of love, of land,
With gentle word and guiding hand.
"Gitanjall" flowed from soul to pen,
A gift of hope for all of men.
In Shantiniketan's sacred shade,
He taught that minds must not be swayed.
By walls of caste or chains of creed,
But nurtured free, like nature's seed

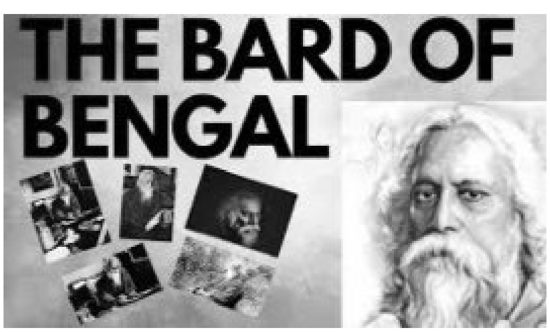

A painter's brush, a playwright's stage,
A prophet wise beyond his age.
He wore no crown, yet earned the right.
To walk with stars, and shine as bright.

For India's soul, he found a voice,
And gave her strength to make a choice.
His song became a nation's pride, A time-
less river, deep and wide.
Now centuries may come and go, But still
his words and visions glow.

Tagore, the sage, the seer, the flame, A
world embraced his mighty name.

Life's Enduring Hope

YACHANA DADSENA
(M.A. ENGLISH II Sem.)

Through the ups and downs,
through joy and through tears,
We write our own stories,
Racing all our fears
Candles flicker tenderly
causing warmth in the dark,
Reminding us of love,
igniting that spark
Each flame tells a story.
of hopes held so dear
In the echoes of our lives,
we find what we hold near
In every laugh, every tear,
in the love that we give,
We discover the beauty in,
simply learning to live
We walk through laughter
we stumble through pain
But every step we take.
helps us grow and gain.
We share laughter and joy.
moments that feel right,
In the simple things.
We find comfort and light
Every heartbeat is precious
every breath a sweet sigh
In this dance of living.
We learn to spread our wings and fly
Like moonlit waves,
my heart beats strong.
Against love's tide.
where wrongs went wrong.
Echoes remain haunting melody,
endless refrain unrequited symphony
Fading whispers lost in time, bittersweet
memories forever in my mind.

The Power of Personality: Unlocking Personal and Professional Growth

Dr. Rajshree Naidu
Guest faculty
(English Department)

The Power of Personality: Unlocking Personal and Professional Growth:-

Personality is a complex and multifaceted concept that plays a significant role in shaping our lives. It influences how we think, feel, and behave, and can have a profound impact on our personal and professional relationships. In this article, we will explore the concept of personality, its various traits and characteristics, and how they can be developed and harnessed for personal and professional growth.

Understanding Personality:-

Personality refers to the unique combination of characteristics, traits, and patterns of thought, feeling, and behaviour that define an individual. It is shaped by a combination of genetic and environmental factors, including upbringing, experiences, and cultural background. Personality is not fixed and can evolve over time through personal growth, learning, and self-reflection.

Key Personality Traits:-

Research has identified a range of key personality traits that are commonly found across different cultures and populations. These include:-

- Extraversion: outgoing, sociable, and assertive

-Agreeableness: cooperative, compassionate, and empathetic

- Conscientiousness: responsible, organized, and dependable Neuroticism sensitive, emotional, and prone to stress

-Openness to experience: curious, open-minded, and creative

Developing Positive Personality Traits:-

While personality is shaped by a range of factors, it is possible to develop and strengthen positive traits through practice, self-reflection, and personal growth. Some strategies for developing positive personality traits include:-

- Self-awareness understanding your strengths, weaknesses, and motivations

2024-25

-Self-reflection: regularly examining your thoughts, feelings, and behaviors Personal growth. setting goals and working towards self-improvement.

Social connections: building strong relationships with others.

-Mindfulness practicing mindfulness and presence in daily life.

The Benefits of Positive Personality Traits.

Developing positive personality traits can have a range of benefits for personal and professional growth. These include Improvs relationships: stronger, meaning full connections with others.

-Increases confidence: greater self-assurance and self-esteem.

-Better decision-making more informed, thoughtful, and effective decision-making.

- Greater resilience: improved ability to cope with stress and adversity.

-Increases creativity: more innovative and open-minded thinking.

Conclusion-

In conclusion, personality is a complex and multifaceted concept that plays a significant role in shaping our lives. By understanding and developing positive personality traits, individuals can unlock their full potential and achieve personal and professional growth. Through self awareness, self-reflection, and personal growth, individuals can cultivate the trains and characteristics that are essential for success and happiness. By harnessing the power of personality, individuals can unlock their full potential and achieve their goals.

India has been home to numerous influential perscralities who have shaped the country's history, culture, and politics. Here are some of the most well-known India's personalities

Historical Figures-

-Mahatma Gandhi: Known as the

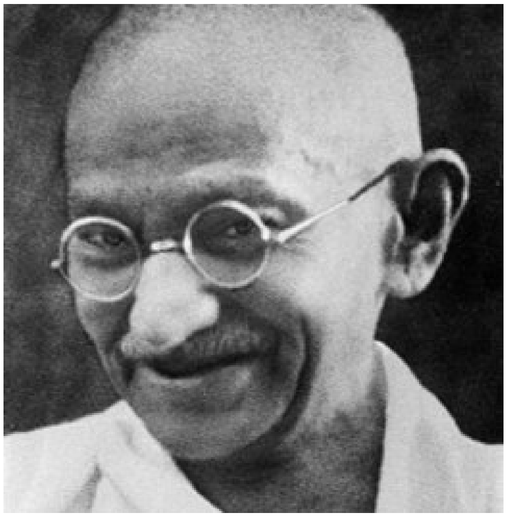

Father of the Nation," Gandhi led India to independence from British rule through non-violent resistance. His philosophy inspired moves for civil rights and freedom globally

2024-25

Jawaharlal Nehru India's first Prime Minister, Nehru played a key role

in the country's Independence movement and promoted parliamentary democracy, secularism, and science development.

Subhash Chandar Bose,

established the Indian National Army and fought for India's independence

Dr. BR Ambedkar. was the designed the Indian Cousfintion, were socio-political leader and reformer who advocated for Dalit right

Rabindranath Tagore : A renowned poet and writer, was the first

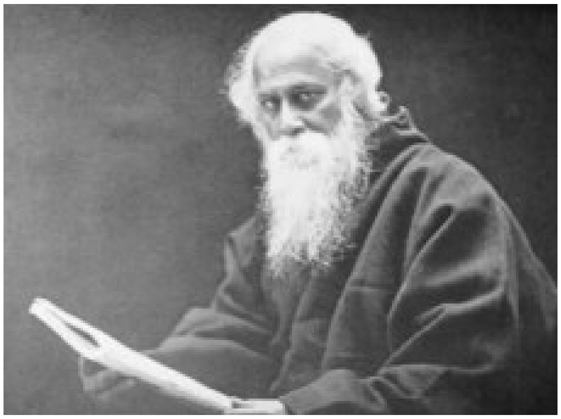

non-European to win the Nobel Prize in Literature.

Sami Vivekananda: A Hindu monk, Viwanda bished hisian philosophies of Vedanta and Yoga to the Weten workl Modero-Day Inspirations

Narenka Mixth The curent Prime Minister of India, Moshi has implement-ed various economic reforms and devek-sponent initiatives,

Mother Teresa A Catholic nun arst Nobel Peace Prize heureste,

Mother Teresa Rounded the

Missionaries of Charity and dedicated her life to serving the poor.

Other Notable Personalities

The Great Ashoka : The third emperor of the Mauryan Empire, Ashoka is remembered for his conversion to Buddhism and his efforts to promote non-violence.

Rani Laxmi Bai: The queen of Jhansi, Rani Laxmi Bai played a key role in the Indian Rebellion of 1857.

Dr. APJ Abdul Kalam: A renowned scientist and former President of India, Kalau made significant contributions to India's space and missile tech-

nology programas.

Virat Kohli: A celebrated Indian cricketer, Kohli is known for his excep-

tional hatting skills and kadership

Neeraj Chopra: An Olympic gold medallist in javelin throw, Chopra has become a symbol of bestia's sporting prowess

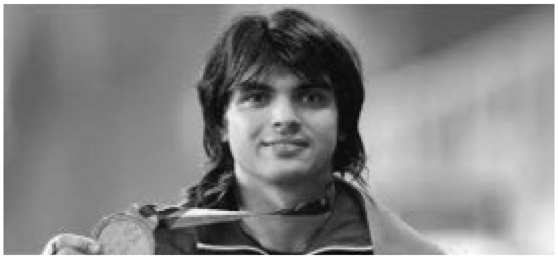

The Theme of Social Class in Jane Austen's 'Pride and Prejudice'

Sugandha Saxena
M.A. English Literature
(II - Semester)

INTRODUCTION

"It is a truth universally acknowledged, that a single man in possession of a good fortune, must be in want of a wife", mark the famous opening lines of one of the most loved novels of the 19th century, "Pride and Prejudice" by Jane Austen. "Pride and Prejudice" was originally written under the title "First Impressions between 1796 and 1797 and was published later in 1813.

The novel was written during the Regency period of the Georgian era and follows the story of a young maiden, Elizabeth Bennet, navigating her way through love and societal expectations.

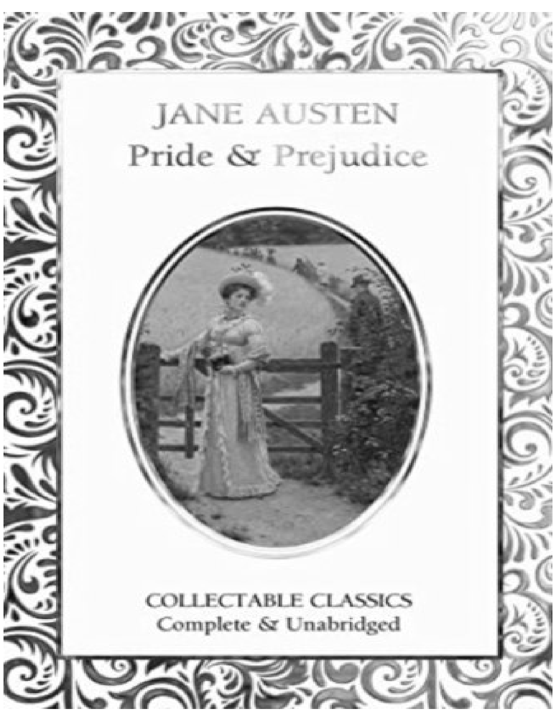

MAJOR THEMES

The novel explores a myriad of themes, such as love, mamage, pride, prejudice, class, reputation, and many others. As suggested by the title of the novel. Pride and Prejudice comprise a vital role in the development of the novel.

SOCIAL CLASS AS SEEN IN "PRIDE AND PREJUDICE"

Social Class is defined as 'a grouping of people into a set of hierarchical social categories, the most common being the working class, middle class, and upper class based on social and economic status. In the novel "Pride and Prejudice", Jane Austen wrote about social class extensively. Her novel describes how income and

wealth, family lineage and living standards, all contributed to mark out social class. In the novel, Austen depicted that marriage has an immense role in social rank. Throughout her novel, she displayed the status of British society in the 19th century having class issues and marriages based on economic advantages and social upliftment rather than compatibility and love.

However, she satirized the convention of marriage in her novel. She demonstrated that mere personal preferences like wealth and class factors could produce only misery, shame, sorrow and isolation. With great irony and satire, Jane showed how people were influenced by social rank and wealth. Women were reduced to the status though they wanted to achieve more in life after getting married.

So how did the concept of class come about? Class and individual identity rely upon the capitalist system of division of labour. This division is the manifestation of all sorts of major social inequalities existing since time immemorial.

There were also concepts of aristocracy, mobility, tended gentry, etc. Thus novel predominantly deals with the well-off range people of the society of that time. The English society of eighteenth and nineteenth century was majorly governed by strict inheritance laws. The property equally distributed among the members, of the male heirs.

State of women

Women had no rights to say in the financial matters as explained in the preceding point. This fact left them with no choice but to marry a rich man to lead a

2024-25

comfortable life thus making meanings the utmost important event of their life. Women looked marriage as a means of stability which made them even more dependent on men. Hence, spinsterhood was not seen in high regards.

However, a woman of the upper class could expect to be granted a "fortune" from her family upon marriage or the death of her father, if she is married, it would contribute to her husband's income, otherwise it would cover her living expenses.

It is evident in the story that it was through women that a family's reputation stayed intact. For example, when Lydia runs away with Wickham, Elizabeth is seen panicking about the scandal and how this event will bring shame to the family and also reduce the other sisters chances of getting married.

Concept of Gentlemen

The gentleman concept covers several terms including the army, clergy, and even the merchants. The Judgement of gentlemen's nature was based primarily on social class and wealth.

Austen gave equal, if not more weight to personal qualities like virtue and behavior, One of the features that

gentleman should possess physical beauty.

Talking about Mr. Darcy, these features of physical beauty, wealth and class makes him admirable and desirable to his surroundings, including the ladies. The physical features of Darcy succeeded in winning Meryton society's interest during the ball

However, his physical beauty disagrees with his manner. As already mentioned, the gentleman is admired for his male appearance Darcy's initial appearance in "Pride and Prejudice" is staged with arrogance. This made the society at

2024-25

Meryton reluctant to accept him and the female protagonist mistook his character. This illustration of him is far from the way gentlemen quality.

Sometimes, the gentleman needed to show who they were and where they came from .

As the story progresses, it is found that he is portrayed as a quick-witted gentleman and is in harmony with his heroine. After a short visit to his estate, Georgiana, is revealed as well as the housekeeping staff sang his praises

Additionally, his help towards Elizabeth's sister, Lydia, who eloped with Wickham uncovers his setfless nature. He provides dowries from her end for marriage even when he had no need to. His action is in fact without the knowledge of anyone including Elizabeth.

Austen succeeded in projecting him as an example of what the gentlemen should be and how they supposedly behave. To say the least, he is a layered and complex character by nature.

Factors affecting society during the regency era in Britain

To understand the society and its expectations, it is imperative to outline the major events occurring in Britain during the regency period and their impact. The period is marked for its political and economic instability that followed in the 1810s and 1820s as well. These historical trends have made a considerable role in Austen's domestic fictions

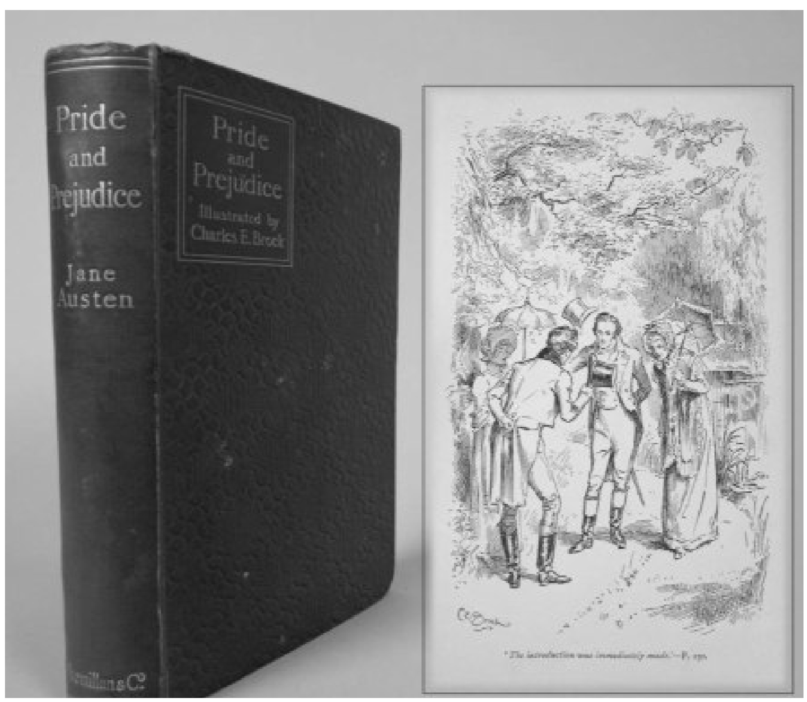

Being the beginning of the Industrial Revolution, the period saw a shift in arts and letters to an era of

romance. It was also the period in which the first traces of feminist and ebolitionist concerns were heard in Western Europe. Thus Austen got recognition for her works Symbolism/reflection in characters

Austen's characters can be understood as symbols reflecting different thought processes throughout her tale. Reflecting the financial insecurity of the familly, Mrs. Bennet relentlessly pursues advantageous marriages for her daughters. For the Bennet sisters, marriage represents a means of securing their financial future and social standing, given.

Characters like Mr. Darcy radiate an air of atimocratic entitlement and privilege, Characters like Mr. Bingley, though lacking aristocratic ancestry. ascend the social ladder through their wealth and connections and gains acceptance into elite circles.

Through Elizabeth Bennet's wit and independence. Austen challenges the notion that one's worth is solely determined by birth or fortune, advocating instead to prioritize individual merit and virtue in a world with widespread prejudice and pretension.

Austen deftly exposes the tensions between personal desires and societal expectations, as characters grapple with the competing demands of love, duty, and social advancement.Austen's motive to break social barriers. The marriages of Elizabeth and Darcy, of Bingley and Jane which were dictated by love, is proof enough of the train of thoughts that went through the author's mind, desiring to put out the message of breaking class consciousness.

Although she entertains the idea of marrying for advantage as seen in Charlotte's case, she advocates for marrying for love as far as possible.

CONCLUSION

Not only the concept of 'pride' and 'prejudice' is a reflection of the time, but social divisions need to be analyzed thoroughly as well. Thus, taking in the historical perspective of the era, social divide was prominent among the people, not only in terms of upper, middle and lower class but also in terms of gender. This fact gives an important factor to consider while studying the 'Pride and Prejudice', a timeless novel by one of the most influential writers, Jane Austen.

* * *

Jane Austen: The Enduring Legacy of a Literary Genius

Harsh Sahu
M.A.2nd sem. (English Literature)

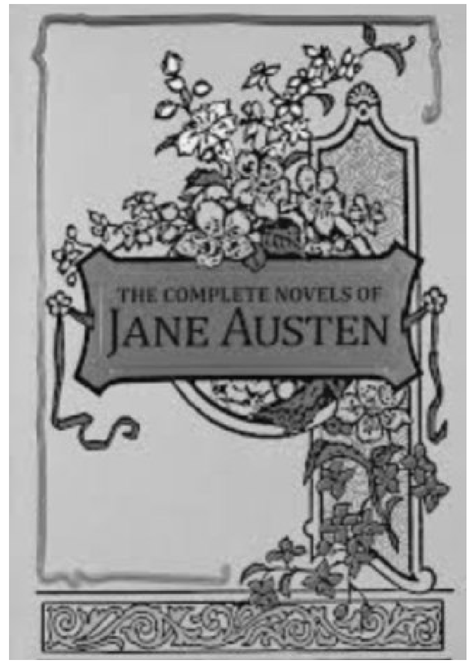

Jane Austen: A Timeless Literary Icon : Jane Austen, born on December 16, 1775, in Steventon, Hampshire, England, is one of the most beloved and influential novelists in English literature. Known for her sharp wit, keen observations of society, and pioneering female characters, Austen's work continues to captivate readers more than two centuries after her death.

Early Life and Education : Jane was the seventh of eight children born to George Austen, a clergyman, and his wife Cassandra Leigh Austen. The Austen household was lively and intellectually stimulating. Her father encouraged love for reading and provided access to a large home library,

which deeply influenced Jane's literary development.

From a young age, Jane showed an aptitude for storytelling. By her teens, she was already writing short stories, plays, and satirical pieces for the amusement of her family. These early works, known collectively as her "Juvenilia," display her early flair for satire and understanding of human behavior.

Literary Career :

Jane Austen's professional writing career began in earnest in her twenties, although her first novel wasn't published until 1811. Her debut, "Sense and Sensibility," was released anonymously like all her published works during her lifetime-bearing only the title "By a Lady." This novel was followed by:

"Pride and Prejudice" (1813) - Often considered her masterpiece, it showcases the evolving relationship between Elizabeth Bennet and Mr. Darcy

"Mansfield Park" (1814) - A more serious novel.

"Emma" (1815) - A witty portrayal of a spoiled but charming matchmaker.

"Northanger Abbey" and "Persuasion" - Published posthumously in 1817, these works reflected both satire and maturity in style and theme.

Austen's novels primarily explored the lives and concerns of the British landlord gentry at the turn of the 19th century. She is renowned for her commentary on issues such as marriage, social status, and women's dependence on men for financial security.

Personal Life:

Despite the romantic plots of her novels, Jane Austen never married. She was briefly engaged to Harris Bigg-Wither in 1802 but called off the engagement the next day. She remained close to her family throughout her life, especially her sister

Cassandra, who was also her confidante and supporter.

In 1801, the Austen family moved to Bath, a city Jane famously disliked. After her father's death in 1805, the family faced financial difficulties and moved several times before settling in Chawton in 1809. It was there that Jane revised earlier drafts and wrote new novels, Death and Legacy:

Jane Austen fell seriously ill in early 1816, likely from Addison's disease or Hodgkin's lymphoma, and died on July 18, 1817, at the age of 41. She is buried in Winchester Cathedral.

Though her books were modestly successful during her life, Austen's reputation grew significantly in the decades following her death. Today, her novels are celebrated worldwide and adapted into countless films, TV series, and literary reinterpretations.

Jane Austen's writing endures for its timeless portrayal of human nature, social critique, and the elegant balance of humor and insight. She remains a shining figure in literature, reminding readers of the power of wit, love, and integrity.

विभिन्न खेल विधाओं में पुरस्कृत महाविद्यालय के खिलाड़ी छात्र-छात्राएं

विभिन्न गतिविधियों में विजेता नेता जी सुभाष चंद्र बोस हाउस के प्रभारी प्राध्यापक पुरस्कार ग्रहण करते हुए

प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त छात्रा को पुरस्कृत करते हुए अपर संचालक उच्च शिक्षा डॉ. राजेश पाण्डेय

शैक्षणिक सत्र के प्रारम्भ में आयोजित दीक्षारम्भ समारोह में जाते हुए शहर के मान. विधायक श्री गजेन्द्र यादव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की छात्रा एम्बेसेडर को बैज लगाकर सम्मानित करते हुए शहर के मान. विधायक श्री गजेन्द्र यादव

छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय युवा संसद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले
में महाविद्यालय के छात्र दीपांशु नेताम को राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया।
दीपांशु ने राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता में नई दिल्ली स्थित
संसद भवन में छत्तीसगढ़ राज्य का प्रतिनिधित्व किया ।

छत्तीसगढ़ शासन, उच्च शिक्षा विभाग के आदेशानुसार महाविद्यालय के प्राध्यापक विभिन्न
महाविद्यालयों में स्नातक प्राचार्य के पद पर पदोन्नत हुए । इन सभी नव नियुक्त प्राचार्यों का
महाविद्यालय परिवार द्वारा सम्मान किया गया ।

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श द्वारा मुद्रित।
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in